

चंपक



VISIT...

LANZAROTE
Caliente.COM

STOMAFIT

लिक्विड व टैबलेट

New Pack



अपच
ऐसीडिटी
से तुरंत
आराम



450ML, 200ML, 100ML, 90 TABLETS

®

सुनो जी, बुन्नु की मैडम का धन्यवाद देने के लिए फोन आया था।
क्या चक्कर है काहे का धन्यवाद बटोर रहे हो?



अरी भाग्यवान! शिक्षक दिवस पर स्कूल गये थे साथ **स्टोमाफिट** भी ले गये थे। बुन्नु की मैडम थी गैस से परेशान, हमने दिया **स्टोमाफिट** जिससे मिला उनको आराम। अपने अतरंगी विचारों को दीजिये विराम।



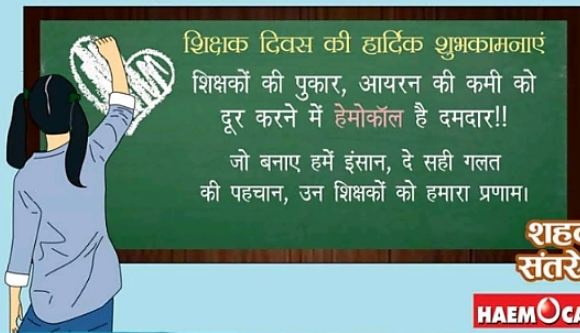
SUNCARE
A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE



HAEMOCAL®

Delicious Taste

ग्लूकोज़ से भरपूर आयरन टॉनिक



शिक्षक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
शिक्षकों की पुकार, आयरन की कमी को दूर करने में हेमोकॉल है दमदार!!
जो बनाए हमें ईंसान, दे सही गलत की पहचान, उन शिक्षकों को हमारा प्रणाम।

New Pack



शहद सा गाढ़ा
संतरे सा स्वादिष्ट

300ML, 450ML

HAEMOCAL-Z जिंक के साथ उपलब्ध (450ml)



SCAN TO BUY HAEMOCAL

Please contact for more information:

SUNCARE FORMULATIONS PVT. LTD.

Ph.: 8447977889/ 999, 011-46108735, Mail: info@stomafit.com

Available on all major Online Pharmacies



SCAN TO BUY STOMAFIT

सितंबर (प्रथम) 2021 अंक : 1220



संस्थापक
विश्वनाथ
1917-2002



सुनो कहानी

लकड़ी की डंडियों के सहारे सीखा मैथ्स	4
कोको का सपना	10
कुंडली गिरोह	15
मिस यू स्टूडेंट्स	20
निरहू ने लिखी कहानी	28
एक क्षण की कीमत	34
मायरा की जीत	39
बदलाव स्वीकार करें	47

ମୁରବୀପୃଷ୍ଠ

शिक्षक हमारा जीवन ज्ञान प्रदान कर के समृद्ध बनाते हैं, वे हमें कक्षा की दीवारों से भी परे जा कर, सहायभूति, ईमानदारी और संकल्प का पाठ पढ़ाते हैं। आइए, न केवल शिक्षक दिवस के दिन बल्कि हर एक दिन हम उन का सम्मान करें।

[illegible]

प्राप्तक बनने और वितरण के बारे में विस्तृत जानकारी संपर्क करें:
दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रभुदेव सिमिटेड
ई-8, झरनेवाला एस्टेट, रानी झंझी रोड, नई दिल्ली-110055
फोन: 91-11-41398888, एक्स. फोन: 119, 221, 264.
मोबाइल/एनएनएल/वाटसाप: 08588843408

दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
बी-3, बहाला उद्योग भवन, मैनापूर रोड, बहाला मंगल-400031, फोन : 91-22-24322661, 43473050

● रचनाओं व स्तंभों के लिए ईमेल: article.hindi @ delhipress.in
● विमंत्रणों व प्रेस सूचनाओं के लिए ईमेल: invites.pressrelease @ delhipress.biz
● संपादक को पत्रों के लिए ईमेल: editor @ delhipress.biz
● ग्राहक विभाग के लिए ईमेल: subscription @ delhipress.in

अपनी कहानी, कविता, दृष्टिकोण तथा प्राम्दस यहां भी भेज सकते हैं :
 writetochampak@delhipress.in या एसएमएस कोड : 091997613
 www.facebook.com/ChampakMagazine और <https://www.youtube.com/user/ChampakSciQ>

મન થહલાઓ

सुंदर रंग भरो	8
नारियलों की गिनती करें	9
देखो हंस न देना	14
बताओ तो जानें	18
छिपे चित्र ढूँढ़ें	23
बिंदु मिलाओ	24
शब्दों का जोड़ा बनाएं	25
स्मार्ट	31
चित्र पूरा करें	38
बास्केट का मिलान करें	43
अंतर बताओ	46

चित्र कथाएं

डमरू और भारोत्तोलन	13
चीकू	32
दादाजी और शिक्षक दिवस	44

विशेष पृष्ठ

मजेदार विज्ञान	19
मेनका आंटी के जवाब	37

लकड़ी की डंडियों के सहारे सीखा मैथ्स

कहानी • सुवादीप भट्टाचार्य

डमरु गधे ने अपनी मम्मी से कहा, “मम्मी, मेरे सिर में दर्द है. आज मैं स्कूल नहीं जाऊंगा.”

यह सुन कर मम्मी घबरा गई. उन्होंने कहा, “डमरु, अगर तुम ठीक नहीं हो, तो मैं तुम्हें डाक्टर के पास ले जाऊंगी, लेकिन बेटा, तुम पिछले सप्ताह भी दो दिन अनुपस्थित हो चुके

हो. अगर ऐसा ही चलता रहा तो तुम्हें इस साल अगली कक्षा में नहीं भेजा जा सकेगा.”

डमरु ने कोई जवाब नहीं दिया. सही बात तो यह थी कि उसे मैथ्स की क्लास पसंद नहीं थी. जब उस के ज्यादातर सहपाठी गिनती करते हैं, तो वह गिनती नहीं कर सकता. वह सोचता कि उसे अंकों की समस्या है. मैथ्स की क्लास के समय वह या तो अपनी नजरें नीचे झुकाए डैस्क को देखता या फिर खिड़की से खेत में काम कर रहे पुरुषों और महिलाओं को देखता रहता. उस के टीचर मिस्टर जंबो उसे चौकस रहने के लिए कहते, लेकिन वह ऐसा नहीं करता.

मम्मी के प्यार भरे स्वर ने महसूस कराया कि उसे स्कूल जाना चाहिए. वह जानता था कि मम्मी उसे कुछ भी नहीं कहेंगी, अगर वह कहता कि तबीयत ठीक नहीं है. दो साल पहले जब उस के पापा का निधन हुआ तो मम्मी ने सारी जिम्मेदारियां अपने कंधों पर ले ली. वे ऊनी कपड़े बुन कर उन्हें मार्केट में बेचती थीं. डमरु जानता था कि उस की मम्मी उसे पालने के लिए बहुत मेहनत करती हैं. वह स्कूल जाने के लिए तैयार हो गया.

डमरु अपने सब से अच्छे दोस्त चीकू खरगोश और मीकू चूहे के साथ बैठता था. दूसरा पीरियड मैथ्स का था. जब भूगोल की



टीचर चली गई, तो डमरू ने सचमुच सिरदर्द महसूस किया। वह जानता था कि अंकों के सवाल का जवाब वह नहीं दे सकेगा। वह सोशल स्टडीज, पर्यावरण और भाषा जैसे विषयों में बहुत अच्छा था, लेकिन जब मैथ्स का पीरियड आता तो वह अपने सीखने की सभी खुशियां खो देता। मिस्टर जंबो दयालु और दोस्ताना स्वभाव के शिक्षक थे। वे क्लास में आते और सभी से नाए चैप्टर खोलने को कहते।



उन्होंने पढ़ाना शुरू किया, “आप जानते हो, जोड़ का अर्थ है चीजों को एकसाथ रखना। पिछले दिनों इस के कुछ भागों को आप ने किया था। अब हम उन को फिर से रिवाइज करेंगे। मैं ब्लैकबोर्ड पर सामान्य अंकों के प्रश्नों को लिखूंगा और आप में से प्रत्येक छात्र को इस का जवाब देना होगा।”

डमरू ने मिस्टर जंबो की तरफ न देखने की कोशिश की। वह खिड़की से बाहर ध्यान से देखता कि वहां क्या हो रहा है? वहां जंपी बंदर था जो लकड़ी की लंबी डंडियों जिन्हें स्टिल्ड्स कहते हैं, पर चल रहा था। वह झाड़ीदार घास के मैदान से हो कर तेजी से आगे बढ़ रहा था। यह एक अद्भुत नजारा था।

अचानक उस ने सुना, “डमरू, क्या तुम मेरी बात नहीं सुन रहे थे,” डमरू ने अपनी निगाहें मिस्टर जंबो की ओर घुमाईं। उन्होंने फिर से पूछा, “क्या तुम स्टिल्ड्स पर सवारी

कर रहे जानवर को देख रहे थे?” डमरू ने सिर हिलाया। मिस्टर जंबो को पता था कि डमरू उन की मैथ्स की क्लास को ऐंजोय नहीं करता है। वह थोड़ी देर के लिए रुका और बोला, “मुझे तुम्हारे लिए कोई व्यवस्था करनी होगी। स्कूल की छुट्टी के बाद तुम मेरे पास आना।”

छुट्टी के बाद डमरू मिस्टर जंबो से टीचर्स रूम में जा कर मिला। टीचर ने कहा, “चलो, स्कूल के पीछे घास के मैदान पर चलते हैं। वहां तुम्हारे लिए मेरे पास एक सरप्राइज है。” वहां एक आगंतुक पहले से ही उन का इंतजार कर रहा था। यह और कोई नहीं, वही था जिसे सुबह डमरू ने लकड़ियों पर सवारी करते हुए देखा था। उस का नाम जंपी था। डमरू ने देखा, उन लकड़ियों को दीवार के ऊपर रखा जा रहा था। मिस्टर जंबो ने कहना जारी रखा, “जंपी, तुम्हारे लिए स्टिल्ड्स यानी लकड़ियों

की एक जोड़ी लाए हैं। वह तुम्हें सिखाएंगे कि इन पर कैसे चढ़ा और आगे बढ़ा जाता है। जंपी, क्या तुम डमरु की सवारी करने की टैक्नीक सिखाने में मदद करोगे?”

जंपी ने उत्तर दिया, “जरूर, यह कोई बहुत मुश्किल काम नहीं है, लेकिन इस के लिए प्रैक्टिस की जरूरत है。” जंपी और मिस्टर जंबो ने डमरु की लकड़ी के दो टुकड़ों पर खड़े होने में मदद की। डमरु हैरान था। अब वह जमीन से ऊपर देख सकता था। जंपी उसे निर्देश देता कि संतुलन बनाए रखने के लिए किस तरह लकड़ियों को थामे रखना है और उस के बाद धीरे-धीरे आगे बढ़ना है। यह सचमुच मजेदार है। डमरु ने कभी नहीं सोचा था कि वह ऐसा कर पाएगा। वह कछुए की तरह चलता रहा।



मिस्टर जंबो ने उस से पूछा, “बिना रुके एक बार में तुम कितने कदम बढ़ा सकते हो?”

डमरु आगे बढ़ा और उस ने जवाब दिया, “6 कदम, सर。”

मिस्टर जंबो ने फिर पूछा, “अब तुम 4 कदम दाएं चलो और फिर 4 कदम बाएं चलो। आप कदमों को गिनो,” डमरु ने गिनती पूरी की और कहा, “मैं कुल 8 कदम चला。”

मिस्टर जंबो ने उस की सराहना की, “बहुत अच्छा。”

“अब 4 कदम आगे बढ़ो, फिर 4 कदम पीछे लौटो और उस के बाद मुझे बताओ कि तुम ने कितनी दूरी तय की。”

उत्तर देने से पहले डमरु ने एक पल के लिए सोचा, फिर कहा, “मैं सोचता हूँ कि मैं ने शून्य दूरी तय की, क्योंकि 4 कदम आगे फिर 4 कदम पीछे आने का मतलब हुआ शून्य。” टीचर उस की प्रोग्रेस से खुश हुए। आखिरकार डमरु मजेमजे में मैथ्स सीख रहा था।

छुट्टी के बाद हर दिन डमरु स्टिल्ट्स फन और मैथ्स एक्सरसाइज करता। जंपी बाउंड्रीवाल पर बैठ कर उन के क्रियाकलापों को देखा करता। जोड़ और घटाव की प्रॉब्लम्स के बाद मिस्टर जंबो अंकतालिका यानी नंबर टेबल, गुणा और भाग यानी डिवीजन के प्रश्नों को उस से पूछते, जो बहुत ही आसान होते थे।

“डमरु, यदि तुम 6 कदम उत्तर की ओर और 6 कदम पूर्व की ओर चले, फिर इसी तरह

6 कदम चल कर पीछे यानी दक्षिण, 6 कदम पश्चिम की ओर चल कर उसी जगह आ गए, जहां से चले थे. तो तुम ने कुल कितने कदम बढ़ाए?” डमरू बिना हिलेडुले सोचता रहा और समझ गया कि उस ने एक ही स्थान पर चारों ओर 6 कदम चल कर घेरना है. 6 कदम उत्तर, फिर पूर्व, फिर दक्षिण और अंत में पश्चिम. इस का मतलब 6 को 4 से गुणा करना है. उसे टेबल याद आया कि 6 को 4 से गुणा करने पर 24 आएगा. उस के उत्तर को



सुन कर शिक्षक ने ताली बजाई और बोले, “बिल्कुल सही उत्तर. तुम एक बहुत ही तेज छात्र हो. मुझे पूरा विश्वास है कि तुम आने वाली परीक्षा में मैथ्स में अच्छे अंक हासिल करोगे.”



डमरू की मम्मी ने उस की पढ़ाई में बदलाव देखा. डमरू हमेशा जोड़घटाव करने से डरा करता था. लेकिन अब वह अपनी पढ़ाई और होमवर्क की शुरुआत मैथ्स से करता था. मम्मी ने डमरू से सुना कि उस



SONAL

के शिक्षक उसे मैथ्स सिखाने के लिए स्टिल्सवाकिंग पर ले जाते थे.

अब डमरू अपनी मम्मी

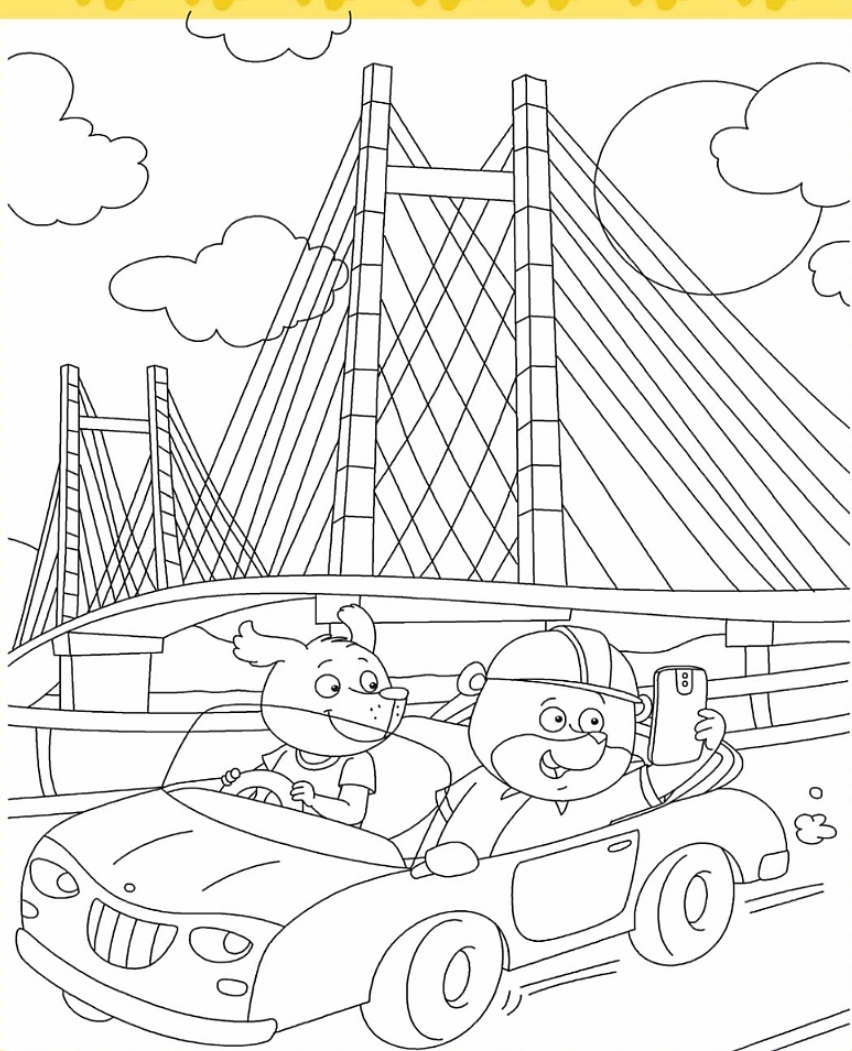
की रोजाना के खर्चे के

हिसाब को लिखने में मदद करने लगा. वह अपनी मम्मी से पूछता कि कितने ग्राम ऊन उस ने मार्केट से खरीदा और प्रतिग्राम का मूल्य क्या है. उस के बाद वह कुल मूल्य लागत निकालता. इतना ही नहीं उस ने मैथ्स की परीक्षा में भी अच्छे नंबर हासिल किए.

सब से ज्यादा खुश मिस्टर जंबो थे. वे जान गए थे कि डमरू को मैथ्स सिखाने का उन का आइडिया काफी कारगर हुआ था. यह काफी काम आया था.



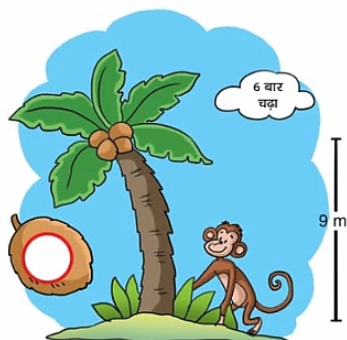
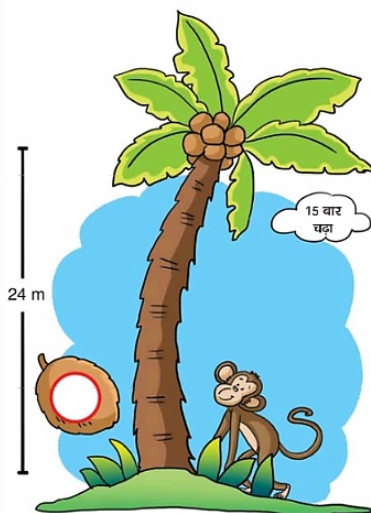
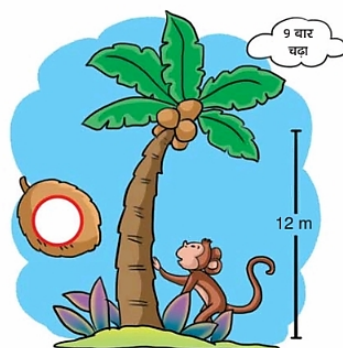
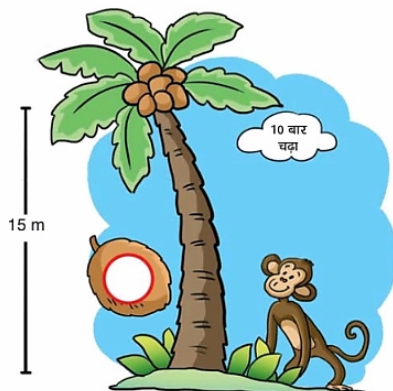
સુંદર રંગ ભરો

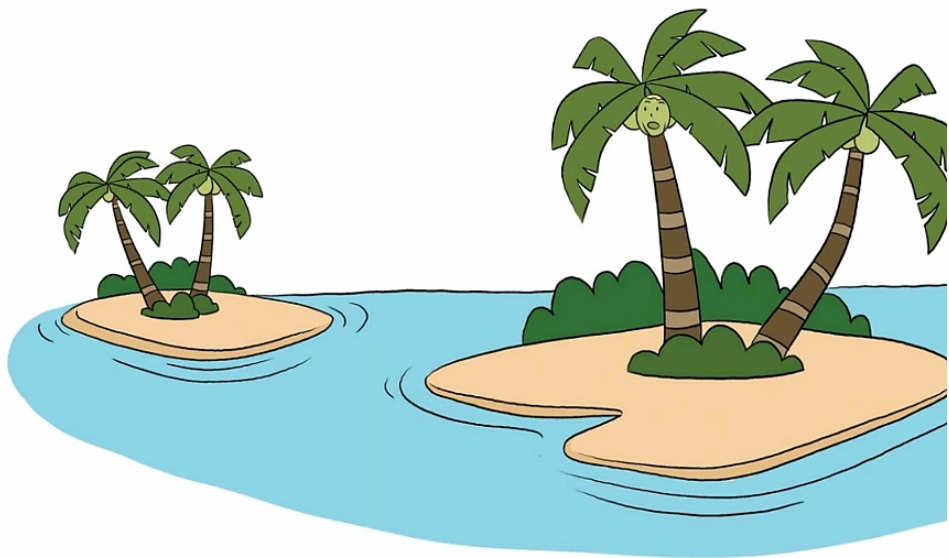


नारियलों की गिनती करें

2 सितंबर को विश्व नारियल दिवस है। नीचे दिए संकेतों को पढ़िए और पता कीजिए कि हरेक चित्र में बंदर के पास कितने नारियल हैं।

- सब से छोटे पेड़ से बंदर ने एक बार में ही 3 नारियल तोड़ लिए।
- सब से लंबे पेड़ से 1 नारियल और अन्य पेड़ से 2 नारियल बंदर ने एक बार में तोड़ लिए।





कोको का सपना

कहानी • जेबाला प्रकाश

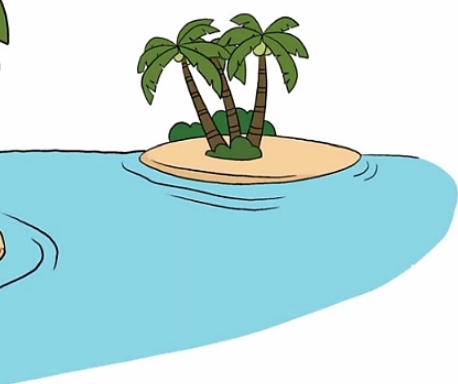
कोको भारत के केंद्रशासित प्रदेश अंडमान निकोबार द्वीप समूह की राजधानी पोर्ट ब्लेयर में समुद्र के किनारे ऊंचे नारियल के पेड़ों पर अपनी बहनों के साथ रहते हुए बड़ा हो रहा था, अभी वह एक छोटा नारियल था।

नारियल के पेड़ इतने ऊंचे थे कि वे समुद्र के उस पार दूर तक देख सकते थे। ठीक सामने बंगाल की नीली खाड़ी थी, जिस में आसमान से घिरे कई छोटेबड़े द्वीप थे, जो दिन में कई बार रंग बदलते मालूम होते थे। दिन में जब समुद्र में लहरें उठतीं तो इस दौरान कई नावें और जहाज एक द्वीप से दूसरे द्वीप तक आसानी से आतेजाते थे। कभीकभी ज्वारभाटे के दौरान पूर्णिमा और अमावस्या को तो लहरें नारियल के पेड़ के तने तक पहुंच जाती थीं और कोको तथा उस की बहनें यह देख खुशी से हंसती थीं।

कोको काफी उत्साहित नारियल था। उस ने बड़े ध्यान से एक रहस्यमय द्वीप को देखा, जहां हमेशा कोहरा छाया रहता था। कोको का सपना था कि वह समुद्र को पार कर उस द्वीप पर जाए। अकसर वह यही सोचता था कि न जाने वहां क्या है? उस ने अपनी बहनों के साथ मां से वहां जाने की इच्छा जाहिर की। मां मुसकराई और उसे विश्वास दिलाया, “कोको, तुम एक दिन जरूर वहां जाओगे, बस धैर्य रखो।”

एक दिन जब तेज धूप थी तो कोको यह देख कर हैरान रह गया कि सफेद बालों से घिरा एक काला बीज हवा में तैरता हुआ पैराशूट की तरह लटका हुआ है।

“यह कौन है?” उस ने मां से पूछा।



मुझे कहां ले जाएगी? मैं निश्चित रूप से अपनी यात्रा का मजा ले रहा हूँ,”

कोको के मन में एक विचार आया. उस ने हवा से प्रार्थना की, “डियर हवा, क्या तुम मुझे वहां उस द्वीप पर नहीं ले जा सकती?”

लेकिन हवा ने हंसते हुए कहा, “माफ करना डियर, तुम काफी भारी हो.”

तभी एक तोता अपनी चोंच में बेर ले कर उस पेड़

मां ने जवाब दिया, “यह मिल्कवीड शीड है?”

कोको ने मिल्कवीड शीड से पूछा, “हैलो डियर, तुम कहां से हो और कहां जा रहे हो?”

मिल्कवीड शीड धीरेधीरे हवा में उड़ा और बोला, “डियर, मैं कोलकाता से हूँ और काफी समय से यात्रा कर रहा हूँ. हालांकि मुझे नहीं मालूम कि हवा

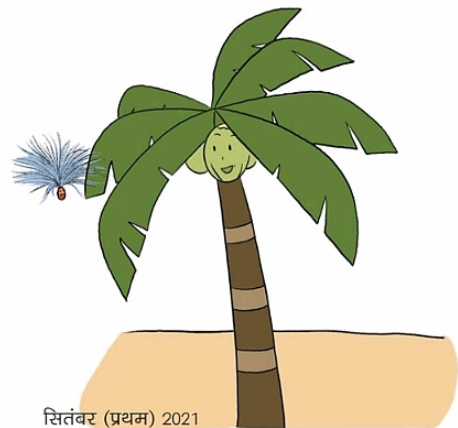


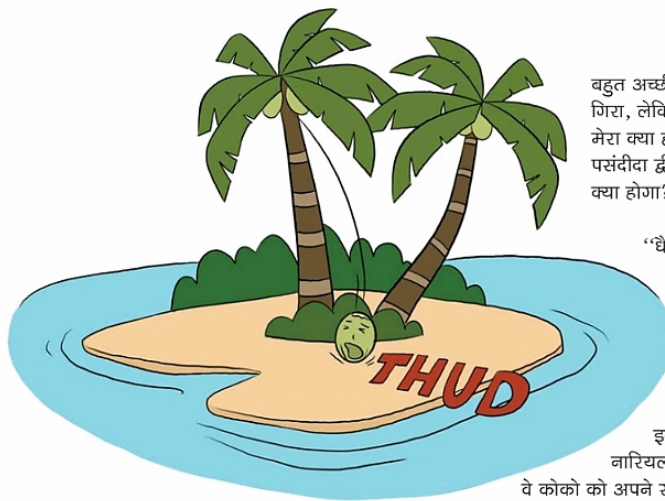
पर चढ़ गया. कोको ने उस से पूछा, “प्यारे तोता, तुम्हें यह बेर कहां मिला?”

तोता ने जवाब दिया, “मैं इसे हैवलैंक द्वीप से लाया हूँ और निकोबार द्वीप समूह पर अपने छोटेछोटे बच्चों के लिए घोंसले में ले जा रहा हूँ.”

यह सुन कर कोको ने तोता से प्रार्थना की, “कृपया मुझे भी अपने साथ ले चलो,” तोता चिल्लाया, “मैं तुम्हें कैसे ले जा सकता हूँ? तुम तो काफी भारी हो,” कह कर वह उड़ गया.

कोको उदास था, लेकिन वह आसानी से हार मानने वाला नहीं था.





बहुत अच्छी बात है कि मैं इतनी ऊंचाई से गिरा, लेकिन मुझे चोट नहीं लगी। पर अब मेरा क्या होगा मां, मैं यहां से अपना पसंदीदा द्वीप भी नहीं देख सकता। मेरा क्या होगा?”

“धैर्य रखो बेटा,” मां ने जवाब दिया।

देर रात आसमान में पूर्णिमा का चांद निकला। आज तेज ज्वार आया था जिस वजह से समुद्र में तेज लहरें उठ रही थीं। इन में कुछ इतनी तेज थीं कि वे नारियल के पेड़ के तने को छू रही थीं।

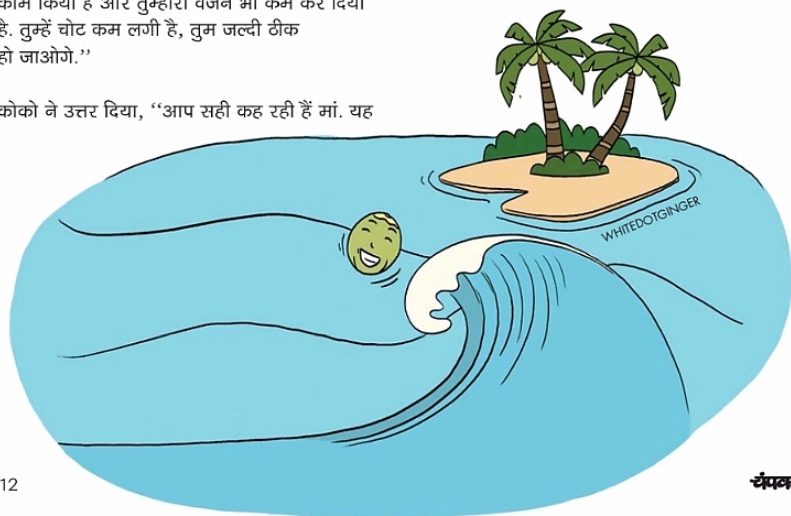
वे कोको को अपने साथ ले गईं।

एक शाम काफी तेज हवा चल रही थी और नारियल का पेड़ झुंघरझुंघर झूम रहा था। कोको से दूट कर रेत पर गिर गया। वह यह देख कर हैरान रह गया कि उस को बिल्कुल भी चोट नहीं लगी। उस की मां ने आवाज लगाई, “बेटा, चिंता मत करो, तुम्हारे अंदर मौजूद रेशों ने गद्दे जैसा काम किया है और तुम्हारा वजन भी कम कर दिया है। तुम्हें चोट कम लगी है, तुम जल्दी ठीक हो जाओगे।”

कोको ने उत्तर दिया, “आप सही कह रही हैं मां। यह

“हाय,” कोको खुशी से उत्साहित हो कर चिल्लाया, क्योंकि वह लहरों के सहारे दूर गहरे समुद्र में तैर रहा था।

“आप सही कह रही थीं, मां, मैं अपने द्वीप तक जाने में इसे ही अपना सहारा बनाऊंगा,” उस ने कहा। ●



डमरू और भारोत्तोलन मशीन

कहानी • शिवेश श्रीवास्तव

फिटनेस ट्रेनर रोहर लोमड़ी के यहां डमरू ने काम करना शुरू किया।

डमरू, देखो, मैं ने औनलाइन क्या पाया है. मुझे अपने जिम के लिए इस भारोत्तोलन वाले तराजू को खरीदना है.

लेकिन यह करता क्या है?

इस के ऊपर कोई भी चढ़ सकता है और खुद वजन माप सकता है.

कोई भी इस पर चढ़ सकता है?

हां, तुम भी चढ़ सकते हो और अपना वजन जांच सकते हो.

ओके.

इस चित्र को सेव कर लो. मैं थोड़ी देर में लौट कर आती हूं.

ओके, मालकिन.

कुछ देर बाद

तुम मेरे फोन के ऊपर क्यों चढ़े हुए हो?

आप ने जैसा कहा था, ठीक वैसे ही मैं अपना वजन तौल रहा था.

मेरा फोन चूरचूर हो गया. बेवकूफ, तुम्हें अपना वजन भारोत्तोलन मशीन पर तौलना था, न कि उस के चित्र पर.

लेकिन आप ने तो इस बारे में बताया नहीं था.

इस से पहले कि मैं तुम पर चढ़ जाऊं, यहां से भाग जाओ.

मैं समझता हूँ कि दौड़ने से मुझे वजन कुछ कम करने में मदद मिलेगी, क्योंकि मेरे वजन ने आप का फोन तोड़ दिया.

तुम ने मेरे फोन को बरबाद कर दिया अब मैं क्या करूंगी?



केशव (विमल से) : मैथ्स का टीचर रूलर को बेंड पर अपने साथ क्यों ले गया?
विमल : क्योंकि वह यह देखना चाहता था कि वह कितना लंबा सोता है?

सिद्धार्थ गौतम, 9 वर्ष, उत्तर प्रदेश

किट्टू (चीकू से) : भारत से दूर कौन है, जापान या सूरज?
चीकू : जापान दूर है, क्योंकि हम सूरज को भारत से देख पाते हैं, पर जापान को नहीं।

नीतिश गर्ग, 9 वर्ष, नई दिल्ली

टीचर (छात्र से) : मेरे पाठ पढ़ाते समय तुम बातें क्यों करते हो?
छात्र : मेरी बातचीत के दौरान आप पढ़ाते क्यों हो?

सान्बि पटेल, 12 वर्ष, गुजरात

मोन् (सोन् से) : मैं ने कल चैक किया था कि कहीं मेरे शरीर में आयरन (लोहा) तो नहीं है?
सोन् : तुम ने कैसे चैक किया?
मोन् : मैं ने इस के लिए एक मैग्नेट का इस्तेमाल किया। वह मेरे शरीर में कहीं भी नहीं चिपका।

नव्या मिश्रा, 11 वर्ष, राजस्थान

राजू (अंजू से) : हम पानी क्यों पीते हैं?
अंजू : क्योंकि हम ज्यादा पानी खो देते हैं।
राजू : नहीं, क्योंकि हम इसे खा नहीं सकते हैं।

अयान विजय, 10 वर्ष, जयपुर



देखो हंस न देना

हाहाहा हाहाहा हीहीही हीहीही

सोहन (मोन् से) : सब से प्रसिद्ध ट्री (पेड़) कौन सा है जो हमें ज्ञान देता है?
छात्र : हिस्ट्री।

अनुग्रह जेस संतोष, 13 वर्ष
राजस्थान

बच्चा (मम्मी से) : मेरे पास एक अच्छी और एक बुरी खबर है। किस को मुझे आप को पहले सुनाना चाहिए?
मम्मी : सब से पहले मुझे अच्छी खबर सुनाओ।

बच्चा : मैं ने साइंस में 99 प्रतिशत प्राप्त किए हैं।

मम्मी : बहुत अच्छा, अब बुरी खबर क्या है?

बच्चा : आप को पहले सुनाई गई खबर सही नहीं थी।

विख्यात गोपाल भारतीय, 10 वर्ष
लखनऊ

टीचर (छात्र से) : बच्चो, कल हम स्पेस पर एक पाठ पढ़ेंगे।
राम : नहीं मैम, मैं नहीं आ सकता।
टीचर : ऐसा क्यों?
राम : मेरी मम्मी कभी भी मुझे



स्पेस यानी अंतरिक्ष में क्लास लेने के लिए नहीं भेजेंगी।

वेंकटा तरन्या, 10 वर्ष
तेलंगाना

रोहित (मोहित से) : ऐसा क्या है जो भूरा, काला और सफेद रंग में आता है लेकिन हमेशा लेट रहता है?

मोहित : चौकलेट

अयिका खन्ना, 9 वर्ष
केरल

राकेश (हरि से) : अगर एक नीवू को चोट लग जाए, वह क्या करेगा?

हरि : वह ऐड यानी किसी की मदद का सहारा लेगा।

राकेश : नहीं, वह लेमन ऐड का इस्तेमाल करेगा।

श्लोक व्यास, 12 वर्ष
अहमदाबाद

मीशू (आशू से) : क्या तुम चीनी भाषा पढ़ कर सुना सकती हो?
आशू : हां, लेकिन तभी जब वह हिंदी या अंग्रेजी में लिखी हुई हो।

विवेकवर्धन, 12 वर्ष, मंडावली
दिल्ली

अपनी यहलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उम्र, पता तथा फोन नं. के साथ लिखें:

चंपक, दिल्ली प्रेस, ए-4, बीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, बदायूँ, मुंबई - 400031

ईमेल : writetochampak@delhipress.in

और SMS: 8657402248

औनलाइन विजिट करें :

www.facebook.com/ChampakMagazine

https://www.youtube.com/ChampakSciQ



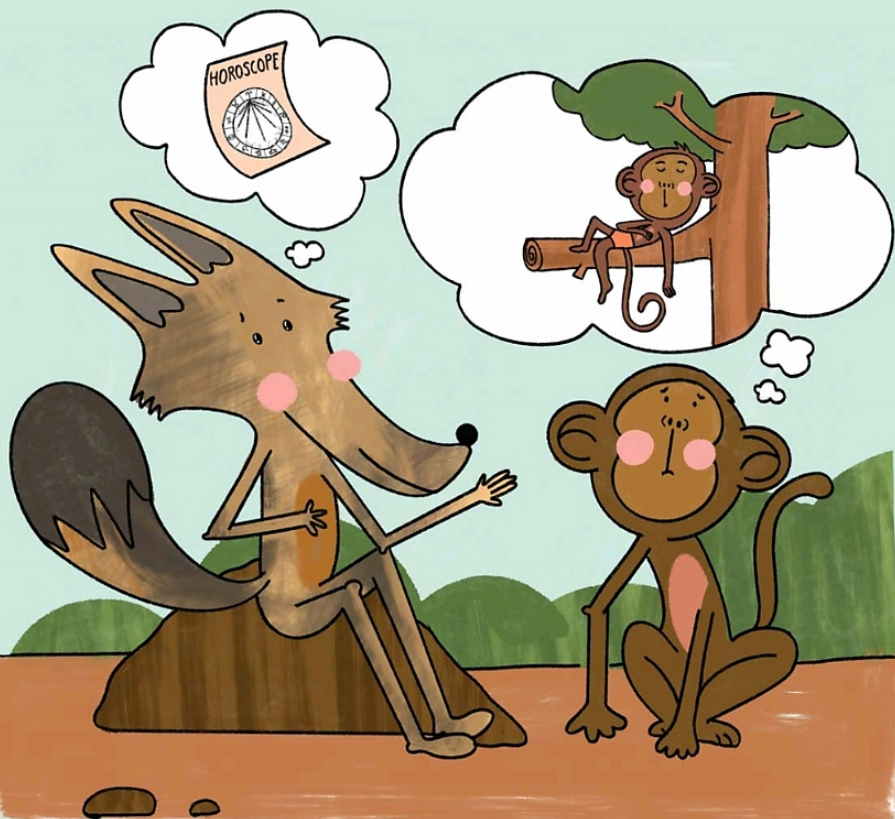
कुंडली गिरोह

कहानी • इंद्रजीत कौशिक

पीकू बंदर के घर काफी समय बाद एक बच्चे सुंदर का जन्म हुआ. इसलिए वह अपने बेटे सुंदर को जान से भी ज्यादा प्यार करता था.

“क्या बात है पीकू, तुम कुछ परेशान दिखाई दे रहे हो?” मैक सियार ने रास्ते में पीकू से मुलाकात के दौरान पूछा.

“क्या बताऊं दोस्त, मैं इसे इतना सबकुछ खिलातापिलाता हूँ पर फिर भी यह बीमार और कमजोर ही रहता है. समझ में नहीं आता कि क्या करूँ?” पीकू ने अपनी परेशानी का कारण बताया तो मैक समझ गया कि इसे आसानी से मूर्ख बनाया जा सकता है.





“लाओ, इस की कुंडली मुझे दिखाओ, अभी सबकुछ पता चल जाएगा,” मैक बोला.

“कुंडली? वह क्या होती है? मेरे पास तो नहीं है,” पीकू ने जवाब दिया.

मैक ने समझाया, “किसी अच्छे ज्योतिषी के पास जाओ और अपने बेटे की जन्मकुंडली बना कर लाओ, तब सब पता चल जाएगा,” मैक ने उसे अपने एक धूर्त साथी हीरू लोमड़ के पास भेज दिया.

पीकू ने अपने बेटे सुंदर को साथ लिया और उस की कुंडली बनवाने के लिए हीरू के घर की तरफ चल दिया.

“कहां जा रहे हो दोस्त, क्या अपने बेटे का स्कूल में एडमिशन करा रहे हो?” रास्ते में चीकू खरगोश ने पूछा, “क्या तुम्हारे बेटे की तबीयत ठीक नहीं है, यह बहुत कमजोर और दुबलापतला दिखाई दे रहा है?”

“इसीलिए तो कुंडली बनवाने के लिए मैं हीरू ज्योतिषी के यहां जा रहा हूँ, इस की खराब चल रही

ग्रहदशा का हल उस से ही पता चलेगा,” पीकू ने बताया तो चीकू को हंसी आ गई.

“लगता है तुम्हें किसी ने गुमराह किया है. तुम्हारे बेटे की हालत देख कर लगता है कि इसे किसी अच्छे डाक्टर की जरूरत है न कि ज्योतिषी की,” चीकू ने समझाया.

चीकू की बात सुन कर पीकू सोच में पड़ गया, क्योंकि वह जानता था कि चीकू कभी गलत सलाह नहीं देता.

उस ने पूछा तो चीकू ने जंगल के सब से अच्छे डाक्टर का पता उसे दे दिया. पीकू अपने बेटे को संता के पास ले गया, जिस ने सुंदर का अच्छी तरह से चैकअप किया.

“इस के दिल में जन्म से ही एक छोटा सा छेद है, जिस की वजह से यह कमजोर और पीला दिखाई दे रहा है. अच्छा हुआ जो तुम समय पर इसे मेरे पास ले आए,” डाक्टर सेंटा ने कहा.

“दिल में छेद? कृपया डाक्टर साहब, मेरा बेटा ठीक तो हो जाएगा न?” पीकू घबरा गया.

“डरो नहीं दोस्त, कुछ बच्चों के साथ ऐसा होता है. मुझे पूरी उम्मीद है कि हम दवाइयों से इसे पूरी तरह ठीक कर देंगे,” डाक्टर सेंटा ने पीकू को धीरज बंधाते हुए कहा.

“इस के इलाज में कितने रुपए लगेंगे डाक्टर?” पीकू ने पूछा, क्योंकि उस के पास इलाज के लिए अधिक रुपए नहीं थे.

“रुपयों के बारे में चिंता मत करो, क्योंकि इस के इलाज का सारा खर्च तुम्हारे दोस्त चीकू ने पहले ही दे दिया है.”

“हां दोस्त, जंगल के हर जरूरतमंद के इलाज का



कुछ दिन बाद जब पीकू का बेटा सुंदर बिलकुल स्वस्थ हो गया तो वह मिठाई का डब्बा ले कर चीकू के घर गया.

“तुम्हारा बहुतबहुत धन्यवाद दोस्त. अगर तुम मुझे समय पर सही रास्ता नहीं दिखाते तो मैं मैक सियार की बातों में आ कर अब तक लुट चुका होता,” पीकू ने चीकू को गले लगा लिया.

“यदि जंगल के सभी जानवर जागरूक और समझदार हो जाएं तो ऐसे धोखेबाज जानवरों की गिरफ्त में कोई नहीं फंसेगा,” चीकू बोला.

खर्च हम कुछ लोग मिल कर उठाते हैं ताकि कोई किसी के बहकावे में आ कर झाड़फूंक, जादूटोना जैसी बातों में फंस कर खुद को बरबाद न करे,” चीकू ने कहा. वह उसी समय क्लिनिक पहुंचा था.

“जंगल में कुछ दुष्ट जानवरों ने निर्दोष जानवरों को बेवकूफ बनाने के लिए एक गैंग बना रखा है, जो भोलेभाले जानवरों की मजबूरी का फायदा उठाते हैं. ऐसे जानवरों को बेनकाब करना बहुत जरूरी है,” चीकू बोला.

चीकू से मिल कर जब पीकू घर वापस लौट रहा था तो रास्ते में मैक सियार मिल गया.

“क्या अभी तक तुम ने कुंडली नहीं बनाई? लाओ, मुझे दिखाओ,” मैक ने उस से पूछा.

“जन्मकुंडली बनवाने की जरूरत मुझे नहीं बल्कि तुम्हें है,” पीकू बोला, “जल्दी ही तुम सब की शैतानी का पता जंगल में सब जानवरों को लग जाएगा.”

“तुम्हारा क्या मतलब है?” पीकू की बात सुन कर मैक का चेहरा पीला पड़ गया और वह वहां से भाग गया, क्योंकि वह समझ गया कि अब उस की पोल खुल चुकी है.





बताओ तो जानें

1. पैर नहीं पर चलती रहती
दोनों हाथों से हमेशा
अपना मुंह पोंछती रहती
घर की दीवार से टंगी रहती.
2. मैं हूँ एक प्रकार का वाहन
पर सब के इस्तेमाल नहीं आता
मेरे हैं 8 लोहे के पहिए
सिर्फ एक सवारी ढोता.
3. काला घोड़ा है
पर सवारी सफेद
एक सवारी उतरे तो
झट दूसरी चढ़े.
4. बुझो भैया एक पहेली
जब काटो तो नई नवेली
बच्चे सीखे मुझ से
लाइन खींचना पढ़नालिखना.

देखें तुम कितना जानते हो



1. मानव निर्मित पहला सैटेलाइट यानी उपग्रह कौन सा था जिसे
अंतरिक्ष में भेजा गया?
(क) ऐक्सप्लोरर
(ख) डॉग फैंग कौंग
(ग) स्पुतनिक
(घ) आर्यभट्ट
2. कागज के उत्पादन में कौन सा राज्य आगे है?
(क) बिहार
(ख) पश्चिम बंगाल
(ग) केरल
(घ) ओडिशा
3. ईमेल के एड्रेस में '@' को इस्तेमाल हेतु किस वर्ष चुना
गया था?
(क) 1996
(ख) 1984
(ग) 1980
(घ) 1972
4. श्रीलंका पहले किस नाम से जाना जाता था?
(क) सीलोन
(ख) तस्मानिया
(ग) मेडागास्कर
(घ) उपरोक्त में कोई नहीं

उत्तर (बताओ तो जानें) : 1-दीवार घड़ी, 2-खोल, 3-तवा रोटी, 4-पहेल.
उत्तर (देखें कितना जानते हो?) : 1-ग, 2-ख, 3-घ, 4-क.

गिलास का इस्तेमाल कर रंग पलटें

आइए, अपवर्तन क्या है, जानते हैं.

मजेदार विज्ञान

आप को चाहिए :

- कार्डबोर्ड का एक टुकड़ा ● ग्लू ● पानी
- पेपर की दो रंगीन छोटी शीट्स ● एक पारदर्शी गिलास.



ऐसा करें :

1. ग्लू का इस्तेमाल करें और दोनों रंगीन पेपर शीट्स को कार्डबोर्ड के ऊपर एकदूसरे के पास चिपका दें.



2. कार्डबोर्ड को दीवार से लगा कर रख दें जैसा चित्र में दिखाया गया है. गिलास को रंगीन शीट के बीच में रखें.

3. अब धीरे-धीरे गिलास में पानी डालें. इसे भर दें.



देखें :

जब आप रंगों को खाली गिलास से देखते हैं, तो वे एक जैसे ठहरे दिखते हैं. लेकिन जब आप गिलास में पानी डालते हैं, तो रंग बिल्कुल उलट जाते हैं यानी खाली गिलास से और पानी भरे गिलास से देखते समय रंगों की स्थिति उलट जाती है.



सोचें :

रंग उल्टे कैसे हो जाते हैं?

हम किसी भी चीज को देख सकते हैं, इस का कारण है कि प्रकाश किसी वस्तु विशेष से परावर्तित होता है और हमारी आंखों तक यात्रा करता है. हमारे इस प्रयोग में पेपरशीट्स के रंग उल्टे नहीं होते हैं, सिर्फ उन के चित्र हमारी आंखों में पहुंचने से पहले उलट जाते हैं. ऐसा अपवर्तन के कारण होता है यानी प्रकाश के मुड़ाव के कारण. जब प्रकाश एक माध्यम से किसी दूसरे माध्यम में, जिन के घनत्व भिन्न होते हैं, जैसे कि हमारे प्रयोग के अनुसार हवा से पानी में गुजरता है तब यह मुड़ जाता है. जब प्रकाश रंगीन शीट से परावर्तित हो कर गिलास में हवा से प्रवेश करता है, तब यह मुड़ जाता है, क्योंकि गिलास में पानी है जो ज्यादा घनत्व वाला पदार्थ है. इसी वजह से प्रकाश सीधे यात्रा करने के विपरीत एक अलग बिंदु पर गिलास से बाहर निकलता है और इस तरह से रंगीन शीट से आने वाला प्रकाश उलटा हो जाता है. यही कारण है कि हमें रंग उल्टा दिखाई पड़ता है.

पता करें :

एक मैग्निफाइंग ग्लास सूर्य की किरणों के इस्तेमाल से कैसे कागज को जला देता है?

सूर्य की किरणें जो मैग्निफाइंग ग्लास से हो कर गुजरती हैं, तो अपवर्तित हो जाती हैं, जब वे लेंस से बाहर आती हैं. मैग्निफाइंग ग्लास से बाहर मिलती हैं. इस बिंदु को फोकल पॉइंट यानी केंद्र बिंदु कहते हैं और चूंकि सूर्य की किरणें गरम महसूस करती हैं, तो आप कल्पना करें कि तब क्या होगा जब वे सारे एक बिंदु पर एकसाथ आएंगे. वहां पर बहुत ज्यादा गरमी उत्पन्न होगी. जब हम मैग्निफाइंग ग्लास के केंद्रबिंदु पर पेपर के एक टुकड़े को लाते हैं, तो यह वहां की सारी गरमी के कारण जलना शुरू हो जाता है.



मिस यू स्टूडेंट्स

कहानी • विजय जी. खत्री

कोरोना महामारी की वजह से बच्चे स्कूल नहीं जा रहे थे. उन्हें घर पर ऑनलाइन ही पढ़ाई करनी पड़ती है. स्कूल ग्राउंड जो आमतौर पर छात्रों की दौड़भाग और खेलकूद से गुलजार रहता था, लेकिन अब एकदम शांत है.

क्लासरूम, बेंचिस, किताबें, दीवारें, स्टेज, प्लेग्राउंड, पेड़, गैरैया सब छात्रों को याद कर रहे थे कि वे स्कूल कब आएंगे?

क्लासरूम ने कहा, “जब छात्र हंसतेमुसकराते, दौड़ते हुए मेरे दरवाजे खोलते थे तो जैसे मुझ में नई जान आ जाती. उन के शोरशराबे से मैं भी खुश हो जाता. जब वे सुबह प्रार्थना करते तो मैं भी उन के साथ प्रार्थना करता कि हे ईश्वर, इन बच्चों को सदा खुश रखना. इन्हें जीवन में आगे बढ़ने की शक्ति देना. स्कूल में जब रूम डेकोरेशन कंपीटिशन होता, किसी छात्र का बर्थडे होता या फिर वार्षिकोत्सव, छात्र मुझे सजा कर कितना सुंदर बना देते.”

बेंच भी छात्रों को याद करते हुए बोली, “राजू और जीतू हमेशा साथ ही बैठते. उन दोनों की तीसरी दोस्त में ही थी. हम तीनों पूरा दिन साथ बिताते.

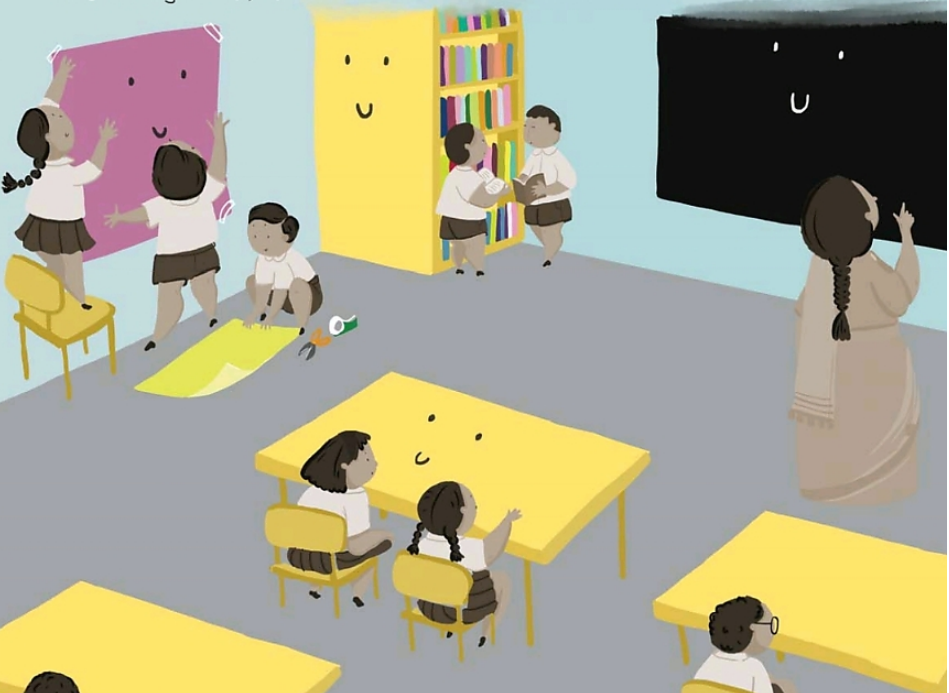
मुझ पर किताबकापियां रख कर वे अच्छे से पढ़ाई करते. मैं पूरा दिन उन का स्कूल बैग संभाल कर रखती. मुझे उन दोनों की बहुत याद आ रही है.”

ब्लैकबोर्ड ने बात करते हुए बताया, “इन दिनों सभी छात्र मोबाइल और कंप्यूटर की सहायता से पढ़ाई कर रहे हैं, लेकिन मुझे उन की चिंता हो रही है. उन्हें सब चीजें ठीक से तो समझ में आ रही होंगी न? कोरोना महामारी से पहले टीचर बारबार मुझ पर चौक से लिख कर छात्रों को समझाते रहते थे. सब पूरे समय मुझे ताकते रहते और मैं उन्हें हमेशा नया कुछ सिखाता रहता. मैं आशा करता हूँ कि पढ़ाई के बाद छात्र मोबाइल से दूरी बनाए रखते होंगे, ताकि उन की आंखों को मोबाइल के अधिक इस्तेमाल से नुकसान न हो.”

तभी अलमारी में रखी किताबें फुसफुसाने लगीं. उन में से एक स्टोरी बुक ने कहा, “हमें भी छात्रों की

बहुत याद आ रही है. उन्होंने पढ़ाई के अलावा अपना ज्ञान बढ़ाने के लिए नियमित रूप से हमें पढ़ा. वे हमारी सुनाई हुई कहानियां, कविताएं और ज्ञान भरी बातें अपने मम्मीपापा, दादादादी या दोस्तों से भी करते. मैं भी आशा करती हूँ कि पढ़ाई के बाद विद्यार्थी अपने मोबाइल और कंप्यूटर का बेवजह इस्तेमाल नहीं कर रहे होंगे बल्कि पढ़ाई के साथ घर पर भी दिलचस्प कहानियां पढ़ कर अपना समय बिता रहे होंगे.”

क्लासरूम की दीवारें भी बोल पड़ीं, “छात्र अपने सभी चाटर्स व पेंटिंग बना कर मुझ पर चिपकाते तो उन का चेहरा आनंद से खिल जाता. टीचर अकसर उन्हें कुछ चार्ट या प्रोजेक्ट बनाने देते. वे बड़े उत्साह से सुंदर चार्ट और पेंटिंग बना कर हम पर टांग देते. हम भी छात्रों को बहुत मिस कर रहे हैं. हमें पूरा विश्वास है कि छात्र घरों में भी कुछ प्रयोग जरूर कर रहे होंगे.”





इन सब को बातें करते देख क्लासरूम के नजदीक बना स्टेज खुद को रोक नहीं पाया और बोला, “हां, मैं भी अकेलापन महसूस कर रहा हूं. हर सप्ताह मेरे यहां नए प्रोग्राम होते तो छात्र उन में उत्साह से हिस्सा लेते और मेरे यहां आ कर नाचते, गाते या भाषण देते. नव्हे बच्चे कितने प्यारे लगते, बच्चों को अपनी कला और हुनर दिखाने का मौका मिलता. वे भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर के गर्व महसूस करते. उन को उत्साहित करने के लिए तालियां बजा रहे अन्य छात्रों को भी हम कैसे भूल सकते हैं? लेकिन यह भी अच्छी बात है कि अभी वे ऑनलाइन कंपिटिशन में हिस्सा ले रहे हैं और अपना हुनर दिखा रहे हैं.”

फिर स्कूल प्लेग्राउंड भी बच्चों को याद करते हुए बोला, “हां दोस्तो, छात्र अकसर स्पोर्ट्स के वक्त या अवकाश के दौरान मेरे पास आते. वे यहां खेलते, कूदते, दौड़ते तो मैं भी उन के साथ खेलने लगता. दोस्तो, हम मिल कर प्रार्थना करें कि छात्र पहले की तरह जल्द ही घर से बाहर निकल कर प्लेग्राउंड में घूमफिर सकें और दिल खोल कर अपने दोस्तों के साथ खेल सकें.”

क्लासरूम के नजदीक एक पेड़ था. वह भी बातचीत में शामिल हो कर कहने लगा, “हां, उन के आने से तो जैसे मैं भी जग जाता था. वे हमेशा मुझे पानी पिलाते. मेरे आसपास सफाई करते और खेलते. मेरी छांव में नाश्ता करते. मुझे बहुत अच्छा लगता. मैं

चुपचाप खड़ा उन की मीठीमीठी बातें सुनता रहता. पक्षियों की चहचाहट के साथ उन की हंसी सुन कर मैं आनंदविभोर हो जाता. जब वे चले जाते तो उन की बचकानी बातें याद कर मैं हंसता रहता.”

पेड़ की बातें सुन उस पर बैठी गौरैया और एक गिलहरी भी बोल पड़ी, “छात्र हमें दानापानी देते थे. उन की लाई खाने की नईनई चीजें हमें बहुत पसंद आतीं. कुछ छात्र हमें नजदीक बुला कर खिलाते तो बहुत अच्छा लगता. वे हमारी बहकने की आवाजें सुना करते और हमारी नकल भी करते. सचमुच बच्चे कितने प्यारे लगते हैं.”

छात्रों को याद करते हुए स्कूल बेल ने भी अपनी यादों को व्यक्त करना शुरू किया, “मेरे बजने की आवाज से ही सभी बच्चों को समय का खयाल रहता. मैं एक पीरियड के बाद जब बजती तो छात्र अगले पीरियड के लिए तैयार रहते, जबकि कुछ छात्र मेरे बजने से खुश हो जाते. कुछ तो अगली बेल सुनने के लिए उत्सुक रहते और जब छुट्टी की बेल बजती तो दौड़ कर अपनी कक्षाओं से बाहर निकल कर घर जाने को उतावले होते. यह देख कर मुझे हंसी आ जाती. इन अनोखी यादों को याद करते हुए यह स्पष्ट है कि सच में हम इन छात्रों को कितना मिस कर रहे हैं.”

दूसरी तरफ स्कूल का दरवाजा दूर तक झांकते हुए बोला, “पता नहीं छात्र पहले की तरह स्कूल कब वापस आएंगे? लेकिन हम प्रार्थना करते हैं कि सभी बच्चे घर में सुरक्षित और खुश रहें. उम्मीद है कि कोरोना महामारी जल्दी समाप्त हो और दोबारा छात्रों की हंसी फिर से स्कूल में गूंज उठे.”

सब मिल कर छात्रों की सलामती के लिए प्रार्थना करने लगे.

छात्रों की कई बातें याद करते हुए वे सभी एकसाथ चिल्लाए, “वी मिस यू स्टूडेंट्स.”

छिपे चित्र ढूँढ़ें

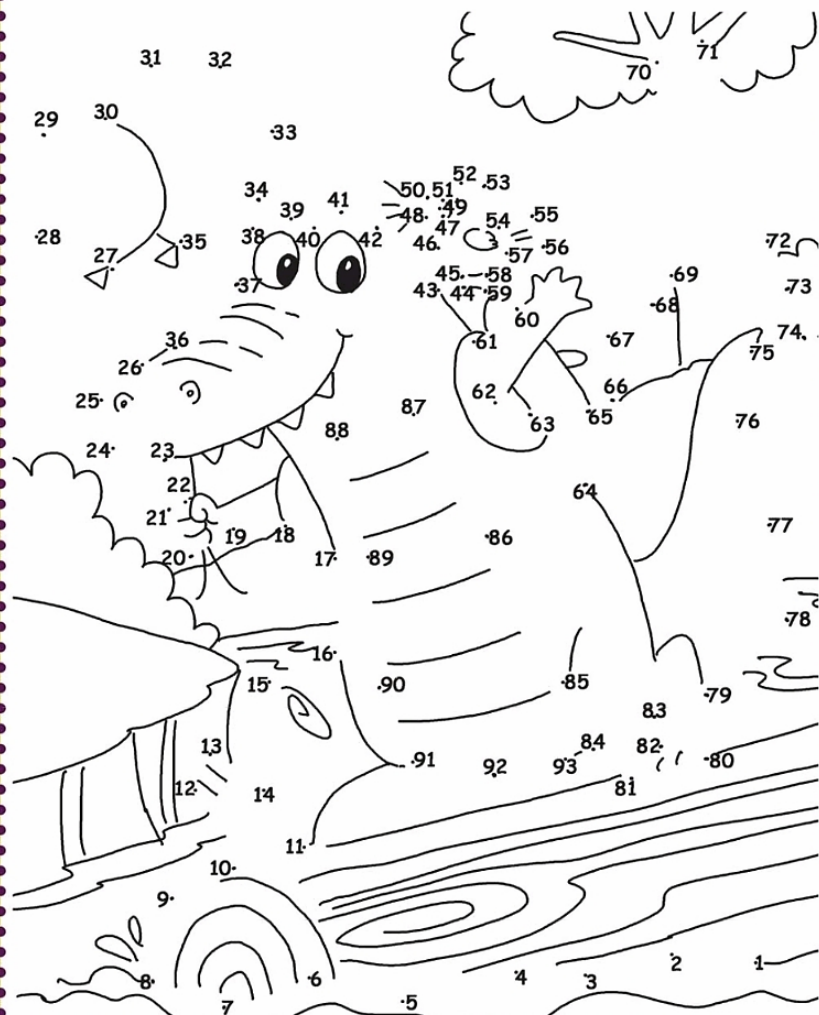
5 सितंबर को शिक्षक दिवस है. टीचर ने अपने सारे लाल पैन क्लासरूम में खो दिए. उन्हें ढूँढ़ने में उन की मदद करें.



उत्तर: अंतिम पृष्ठ पर देखें.

बिंदु मिलाओ

अंकों के अनुसार बिंदुओं को मिलाएं और चित्र पूरा करें.



शब्दों का जोड़ा बनाएं

उन वर्गों को जोड़ें जो अगलबगल हैं या ऊपरनीचे हैं और शब्दों का एक जोड़ा बनाएं. संकेत : घेरा लगे हुए शब्द को देखिए जो सनफलावर और स्केयरक्रो को बनाते हैं. इसी तरह आप भी जोड़े शब्द बनाएं.



सभी देशवासियों को
**75^{वें} स्वतंत्रता
दिवस**

की हार्दिक शुभकामनाएँ

जय हिंद



कण-कण में,
हर धड़कन में...

पहले देश

लाल किले की
प्रातः 6:25 बजे

75
आज़ादी का
अमृत महोत्सव



सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

“ देश की आज़ादी का अमृत महोत्सव कोटि-कोटि भारतवासियों का पर्व है, जिसमें पूरे भारत की परंपरा भी है, स्वाधीनता संग्राम की परछाई भी है और आज़ाद भारत की गौरवान्वित करने वाली प्रगति भी है। यह आयोजन हमारे इन 75 वर्षों की उपलब्धियों को दुनिया के सामने रखने का और अगले 25 वर्षों के विकास की रूपरेखा और संकल्प के लिए प्रेरणा लेने का अवसर है। ”

- नरेन्द्र मोदी



clavp 22201/13/0010/2122

प्राचीर से स्वतंत्रता दिवस समारोह का
से दूरदर्शन द्वारा सीधा प्रसारण

#AmritMahotsav

क्यूआर कोड स्कैन करें और
आज़ादी के अमृत महोत्सव में भाग लें



निरहू ने लिखी कहानी

कहानी • रश्मि

निरहू उत्तर प्रदेश के जिला बलरामपुर के एक छोटे से गांव कोडारी में रहता था। उसे अपनी साइकिल और गन्ने के खेतों से बहुत प्यार था। उस की मां एक किसान थीं और पिता शहर में मजदूर थे।

निरहू खेती में अपनी मां की मदद करता था। उस के पास दो बकरियां और दो काली गायें थीं। जब उस की मां अगली फसल के लिए खेतों को तैयार करने बाहर जातीं, तो वह अपनी बहनों की देखभाल करता था। पिछले साल तीन भैंसों उस के खेत में जबरदस्ती घुस गईं और तैयार फसलों के एकतिहाई हिस्से को खा गईं। उन के परिवार के लिए यह बहुत बड़ी नुकसान था। उस के बाद खेतों के पास ही निरहू ने एक छोटी सी झोपड़ी बना ली और उस में सोना शुरू कर दिया ताकि आवारा जानवरों को फसल बरबाद करने से रोक सके। गांव में हर कोई निरहू के बारे में जानता था।

निरहू 10 साल का था जब उस ने स्कूल जाना छोड़ दिया था। वह पढ़ाई में बहुत अच्छा था, लेकिन उस के पापा को गांव से बाहर जाना पड़ा था, इसलिए निरहू के ऊपर घर, छोटी बहनों और अपनी फसलों की देखभाल की जिम्मेदारी आ पड़ी थी।

वह अपनी बहनों के साथ ज्यादातर समय घर पर ही बिताता था। मां की अनुपस्थिति में वह अपनी बहनों को खाना खिलाता, उन की गंदगी साफ करता और उन्हें नहलाता था। कभीकभी वह उन के लिए खाना भी पकाता था। निरहू अपनी चारों बहनों को बहुत प्यार करता था।

एक समय था जब निरहू सबकुछ जानता था। एक, दो, तीन, चार, ए, बी, सी, डी. हिंदी वर्णमाला। वह लंबी कविताएं और कहानियां भी याद करता था।

लेकिन अब वह अपना नाम लिखना भी नहीं जानता था। उस के दोस्त साहुल और रामकिशोर का इसी साल छठी कक्षा में दाखिला कराया गया था। निरहू अपने दोस्तों से ज्यादा बातें नहीं किया करता था, क्योंकि उसे चिढ़ाए जाने का डर था। कोई भी उस के साथ नहीं खेलता था। वह अपने दोस्तों की तुलना में तेजी से बड़ा होता दिखाई दे रहा था।

हर बार कोई न कोई उस से कुछ पूछा करता तो वह हिचकिचाते हुए मुसकराता रहता और धब्बे लगे अपने दांत दिखाते रहता। गांव में सभी को तंबाकू चबाने की आदत लगी हुई थी, चाहे वह बच्चा हो या 60 साल का बूढ़ा।

निरहू का गांव में अपना एक तालाब भी था। उस ने इस का नाम निरहू ही रखा था, लेकिन उस के अलावा यह बात किसी को भी पता नहीं थी।

ठूबीना घर लौटते समय निरहू को देखने लगी। इसी वर्ष उस का नाम कक्षा 4 में लिखाया गया था। वह पास के ही एक गांव में रहती थी और दूर से उसे देख रही थी, वह अकसर अपने घर के कामों में व्यस्त रहता था।





अब रुबीना को यह काम कठिन महसूस हो रहा था।

साहुल के दादाजी उन 10 दिनों में सबकुछ देख रहे थे। रुबीना के प्रयास और निरहू के समर्पण ने उन पर एक छाप छोड़ी। उन्होंने रुबीना से मदद की पेशकश की। लेकिन वह हिंदी में लंबेलंबे वाक्य लिखने में बहुत अच्छी थी। तीन दिन बाद रुबीना ने उसे हिंदी में स्वर और व्यंजनों को सिखाना शुरू कर दिया।

4 दिन बाद रुबीना उस के घर के अंदर आई और निरहू से पूछा, “क्या तुम एक से सौ तक गिनती सीखना चाहते हो?”

निरहू ने बिना विचारविमर्श किए तुरंत उस के औफर को ठुकरा दिया, जबकि दिल से में वह हां कहना चाहता था।

रुबीना ने उस के इनकार के कारण के बारे में पूछा।

उस ने समझाया, “में फिर से स्कूल नहीं जा सकता। मुझे अपनी बहनों की देखभाल करनी पड़ती है,” रुबीना मुसकराई और बोली, “में स्कूल में छुट्टी होने के बाद तुम्हें सिखाने के लिए आ जाया करूंगी।”

उसे गिनती सिखाने के लिए रुबीना उस के घर आने लगी। लेकिन घर में हमेशा बहुत ही शोरगुल रहता था, बहनें उस के सीखने में बाधा बनती थीं। एक से 10 तक गिनती सीखने में उसे 10 दिन लग गए थे।

रामकिशोर ने भी निरहू की सहायता करने का फैसला किया। वह पढ़ाई में ज्यादा अच्छा तो नहीं था, लेकिन उस ने एक योजना बनाई। जल्दी ही साहुल और रामकिशोर ने कक्षा एक से ले कर 5 तक के छात्रों की पुरानी किताबों को इकट्ठा करना शुरू कर दिया। निरहू की आंखें चमकने लगीं जब उस ने ढेर सारी किताबों को देखा, जो उस से संबंधित थीं।

हर शाम उस के घर में अब हम उम्र बच्चों की भीड़ लगने लगी। कुछ चारपाई पर बैठ जाते थे, तो कुछ सीढ़ियों पर और कुछ चटाई पर बैठ कर पढ़ाई करते। 3 सप्ताह में निरहू ने हिंदी में शब्दों को लिखना शुरू कर दिया। उस ने अपनी नोटबुक में सभी के नाम लिखे। उस ने और उस के दोस्तों ने खाली समय में खेलने के लिए पेपरशीट पर लुडो बनाया।

राहुल कक्षा 5 में था। राहुल की मम्मी मैथ्स टीचर थीं। उन्होंने सुना कि सभी बच्चे निरहू को लिखनापढ़ना सिखाने में सहायता करते हैं। उन्होंने

राहुल को बड़ी सावधानी से मैथ्स के जोड़घटाव और अन्य सभी बेसिक औपरेशंस सिखाए. 3-4 दिन बाद राहुल दक्ष हो गया. उस के बाद उन्होंने उसे कहा कि जोड़ और अन्य बेसिक औपरेशंस को निरहू को सिखा दे, जिसे उस ने 3 दिनों में सिखा था.

शीला की मौसी निरहू की छोटी बहनों के लिए कभीकभी भोजन की व्यवस्था कर दिया करती थीं. अनुराधा आंटी की बेटी ने भी निरहू के घर पर रूबीना से अल्फाबेट सीखना शुरू किया.

धीरेधीरे निरहू ने हिंदी में लंबेलंबे वाक्य लिखने शुरू कर दिए. सोनू अंकल बहुत दयालु थे. उन की स्टेशनरी की दुकान थी और उन्होंने निरहू को हिंदी वाक्य लिखने के लिए एक नोटबुक गिफ्ट में दी थी.

4 सप्ताह बाद निरहू ने अपने दोस्तों की पढ़नेलिखने में सहायता करने के बारे में एक

खूबसूरत और लंबी कहानी लिख डाली. अपने घर सब की उपस्थिति में निरहू ने इस कहानी को पढ़ कर सुनाया. साहुल के दादाजी ने हौसला अफजाई करने के लिए निरहू का माथा चूमा.

उस के बाद से निरहू ने अपनी झोंपड़ी में अपने साथ एक नोटबुक रखनी शुरू कर दी. झोंपड़ी उस के खेत के पास थी और उस में वह अपना ज्यादातर समय बिताता था. वह लिखपढ़ सकता था. उस ने कई सारी कहानियां लिखीं. पूरे समुदाय ने निरहू की पढ़नेलिखने में मदद की थी.

निरहू ने अपनी सभी इस्तेमाल की हुई किताबें हेमा को उपहार में दे दीं, निरहू और राहुल ने बुनियादी गणनाओं में हेमा की मदद की. रूबीना की बहन शीला ने उसे वाक्य रचना सिखाई.

निरहू अब झिझक कर नहीं बल्कि मुसकरा कर लोगों से बातचीत करने लगा.



पैन होल्डर

देविका मेनन

स्मार्ट

5 सितंबर को शिक्षक दिवस पर अपने शिक्षक के लिए, आइए, इस तरह से एक पैन होल्डर बनाते हैं.

आप को चाहिए : पेपरकप, आइसक्रीम स्टिक्स, क्रेयॉंस, ग्लू.



ऐसे बनाएं :



1. एक आइसक्रीम स्टिक लें और एक क्रेयॉंस का इस्तेमाल करते हुए इसे रंगें.

2. इसी तरह 20 आइसक्रीम स्टिक्स को अलगअलग क्रेयॉंस कलर से रंग दें.



3. पेपरकप के ऊपर इन सारी स्टिक्स को गोंद लगा कर चिपका दें. आप जैसा चाहें इसे वैसा सजा लें.



अब आप का पैन होल्डर बन कर तैयार है.

अपने घर पर इसे स्वयं ही बनाने की कोशिश करें. हमें अपनी प्रतिक्रिया
writetochampak@delhipress.in या एक फोटो खींच कर +91 8657402248 पर भेज दें.

चीकू

चित्रकथा : दास



हां, जब वे पीधे बड़े पेड़ हो जाएंगे. तब उन पर बहुत आम लगेंगे. जिन्हें मैं बेचूंगा और फिर अमीर बन जाऊंगा.



वाउ, क्या बात है. तुन्हें दिवास्वप्न जरूर देखने चाहिए. खैर, मैं इस बात को स्वीकारता हूं कि तुम अमीर बनने जा रहे हो. इसलिए खुशी मनाने के लिए तुम हमें कुछ मिठाइयां क्यों नहीं दे देते हो?



हां, जरूर, लो, कुछ मिठाइयां ले लो, प्लीज.



जल्दी ही वह वहां से चला गया.

यह मिठाई तो बहुत ही स्वादिष्ट है.

हां, जरूर मिठाई बहुत स्वादिष्ट है. लो, कुछ मिठाई ले लो, प्लीज.



पिगगी कुछ देर बाद रोता हुआ आया.

अरे, पिगगी, तुम क्यों रो रहे हो? और तुम्हारा मिठाई का डब्बा कहाँ है?



शैतान भालू सड़क के उस पार बैठा था. उस ने मेरी मिठाई से छीन ली.



मैं उसे सबक सिखाऊंगा.

तुम उसे कौन सा सबक सिखाओगे? वह पहले ही सारी मिठाई खा चुका है. इधर देखो, उस ने खाली डब्बे को दूर फेंक दिया है.



चीकू और मीकू, उस के नजदीक मत जाओ. वह बहुत दुष्ट है.



चीकू भालू के पास गया.

तुम ने सड़ी हुई मिठाइयां खाने के बाद डब्बे को रोड पर क्यों फेंक दिया? तुम सिर्फ बीमारी फैला रहे हो.



सड़ीगली मिठाइयां? आक... थू... अर...र. मैं समझ गया हूं कि मुझे किसी का सामान नहीं चुराना चाहिए. मैं कहीं बीमारी न हो जाऊं.



एक क्षण की कीमत

कहानी • कुसुम अग्रवाल

27 जून, 1964 को केरल के कोझिकोड जिले के पय्योली गांव में एक बच्ची ने जन्म लिया। उस का नाम ऊषा रखा गया। ऊषा के पिता का नाम ई.पी.एम. पैथल तथा माता का नाम टी.वी. लक्ष्मी था। उस के जन्म के समय घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। उस के पिता की कपड़ों की एक छोटी सी दुकान थी और 6 बच्चे थे, इसलिए उन्हें परिवार के भरणपोषण में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। इस की वजह से ऊषा कुपोषण का शिकार हो गई और बीमार रहने लगी।

लेकिन जैसेजैसे ऊषा जवान होती गई, उस का स्वास्थ्य सुधरने लगा। इस के साथसाथ वह काफी सक्रिय भी हो गई। सारे दिन इधरउधर घूमना, दौड़ना, ऊंची दीवारों पर चढ़ना ही उस का पसंदीदा शौक था। उस के इस शौक में उस की लंबीलंबी टांगों ने भी बहुत मदद की।

ऊषा की मां कहतीं, “अरे, थोड़ी देर बैठ भी जाया कर,” लेकिन उसे एक जगह टिक कर बैठना बिल्कुल भी पसंद नहीं था। हां, इस बात का मां को फायदा भी था, क्योंकि ऊषा उन के बाहर के सब काम पलक झपकते ही कर देती थी। चाहे बाजार से कुछ सामान लाना हो या फिर पिताजी की दुकान तक पैदल जाना हो, वह इतना तेज चलती थी कि इन सब कामों में आम बच्चों से आधा से भी कम समय लेती थी।

गरीब होने के बावजूद ऊषा के मातापिता उसे स्कूल भेजने लगे। जब वह चौथी कक्षा में थी, तो एक दिन उस के टीचर ने उसे 7वीं क्लास की चैंपियन के साथ दौड़ लगाने को कहा। ऊषा छोटी थी जबकि वह

लड़की बड़ी और चैंपियन थी। लेकिन फिर भी ऊषा उस के साथ दौड़ी और उस से आगे निकल कर उस ने रेस जीत ली।

उसी दिन से ऊषा की एथलेटिक्स में रुचि बढ़ गई और उस ने खेलकूद में अधिक उत्साह से भाग लेना शुरू किया।

एक दिन स्कूल से घर वापस आने के बाद ऊषा ने अपनी मां को बताया, “मां, हमारी स्कूल में बहुत से कार्यक्रम हो रहे हैं जिन में दौड़ प्रतियोगिता भी है।”

उस समय ऊषा के मामाजी भी वहां उन से मिलने आए हुए थे। यह बात सुन कर वे बोले, “फिर तो तुझे इस दौड़ प्रतियोगिता में अवश्य हिस्सा लेना चाहिए। सारे दिन दौड़तीफिरती है। इसलिए अपने इस टैलेंट का इस्तेमाल करो।”

मामाजी की बातों का ऊषा पर गहरा प्रभाव पड़ा



और उस ने स्कूल में होने वाली प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रतियोगिता में कुल 13 लड़कियों ने हिस्सा लिया, लेकिन उन में ऊषा सब से छोटी थी। उस ने जब भागना शुरू किया तो पलक झपकते ही सब से आगे निकल गई और उस ने दौड़ जीत ली। यह देख कर वहां मौजूद उस के सभी टीचर्स हैरान रह गए। दौड़ खत्म होने के बाद जब उन्होंने देखा कि ऊषा ने दौड़ पूरी करने में बहुत कम समय लिया और अनजाने में ही नैशनल रिकॉर्ड तोड़ दिया। तब उन्हें यह अहसास हुआ कि इस लड़की में अदभुत प्रतिभा है और उसे प्रोत्साहित करने की जरूरत है।

ऊषा भी अपनी उपलब्धि से बहुत खुश थी और उस की खेलों में रुचि बढ़ गई। वह पूरे दमखम के साथ खेल के मैदान में उतर गई और जल्द ही वह पूरे जिले की जानीमानी एथलीट बन गई। उसे सरकार की ओर से 250 रुपए की छात्रवृत्ति भी मिलने लगी। अब उस के परिवार के लिए खर्च की भी समस्या नहीं थी।

1976 में जब ऊषा को पता चला कि केरल के कन्नूर में लड़कियों के लिए एक स्पोर्ट्स स्कूल खोला जा रहा है तो उस ने उस स्कूल में प्रवेश लेने का फैसला किया और प्रवेश के लिए कोचिंग लेनी शुरू कर दी।

1979 में नैशनल स्कूल गेम्स प्रतियोगिता जीतने के बाद जब ऊषा पुरस्कार लेने स्टेज पर गई तो उस के कोच की नजर उस पर पड़ी। ऊषा की तेज चाल और पतलेदुबले शरीर को देख कर कोच को यह अंदाजा हो गया कि यह लड़की खेलजगत का हीरा है, इसे तराशा जा सकता है।

उस दिन से कोच ओ.एम. नांबियार ने ऊषा को प्रशिक्षण देना शुरू कर दिया। ऊषा ने भी कड़ी मेहनत की और दिनरात अभ्यास किया। वह बिल्कुल भी आलसी नहीं थी और न ही मेहनत से घबराती थी इस से उसे अपने प्रदर्शन में सुधार करने में मदद मिली।

ओ.एम. नांबियार समझ चुके थे कि ऊषा में एक अंतर्राष्ट्रीय एथलीट छिपी हुई है। अतः उन्होंने उसे आगे तक ले जाने की ठानी और लगातार प्रशिक्षण दे कर 'गोल्डन गर्ल' का खिताब दिलवा दिया। इस के बाद ऊषा ने कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा।

अब तो आप समझ गए होंगे कि मैं किस के बारे में बात कर रहा हूं, यह कोई और नहीं पिलावुल्लाकंडी थेकेपारांबिल ऊषा यानी पी.टी. ऊषा है। ऊषा ने अपने कैरियर में कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा।

महज 16 साल की उम्र में पी.टी. ऊषा ने मास्को ओलिंपिक में भाग लिया और सब से कम उम्र की भारतीय एथलीट का खिताब अपने नाम किया। 1982 के एशियन खेलों में पी.टी. ऊषा ने 100 और





200 मीटर दौड़ में सिल्वर मैडल हासिल किया। उस के बाद कुवैत में हुई एशियन ट्रैक एंड फील्ड चैंपियन की 400 मीटर रेस में गोल्ड मैडल जीता। वह ओलंपिक में पहुंचने वाली प्रथम भारतीय महिला है। 1985 में उन्हें महानतम महिला एथलीट का पुरस्कार मिला। ऊषा का नाम दुनिया की 50 सब से प्रभावशाली महिला एथलीट के साथ जुड़ गया।

पी.टी. ऊषा ने श्रीनिवासन से शादी कर घर बरसाया तथा बेटे उज्ज्वल के जन्म के बाद एथलेटिक्स से ब्रेक ले लिया, लेकिन वह 1994 हिरोशिमा एशियाड में रजत पदक हासिल करने में कामयाब रही।

लौस एंजिल्स ओलंपिक में वह सिर्फ 1 सैकंड के 100वें भाग के अंतर से कांस्य पदक जीतने से

चूक गई, उस दिन से ऊषा को यह समझ आ गया कि जिंदगी में एक क्षण की क्या कीमत है?

पी.टी. ऊषा कई अंतरराष्ट्रीय पदक जीत चुकी है और दक्षिण रेलवे में उस ने अधिकारी के रूप में कार्य किया।

वर्तमान में ऊषा केरल के कोझिकोड में एक एथलेटिक्स स्कूल चलाती है, जहां 10 से 12 वर्ष की लड़कियों को ट्रेनिंग दी जाता है। ऊषा का मानना है कि भारत में प्रतिभाशाली लड़कियों की कोई कमी नहीं है। बस, जरूरत है उन्हें सुविधाएं और अवसर देने का। वह अपने प्रशिक्षण द्वारा भारतीय एथलीटों के भविष्य को उज्ज्वल बनाने और उन की प्रतिभा निखारना चाहती है।

हालांकि अब ऊषा खेलजगत से रिटायर हो चुकी है, लेकिन अभी भी जब हम तेज दौड़ने वाले की बात करते हैं तो पी.टी. ऊषा का नाम ही जबान पर आता है।

पी.टी. ऊषा को गोल्डन गर्ल, पय्योली एक्सप्रेस, ट्रैक एंड फील्ड की रानी और उड़नपरी आदि नामों से भी जाना जाता है। ऊषा ने यह साबित कर दिया है कि यदि दृढ़ इच्छाशक्ति हो तो सीमित संसाधनों से भी मंजिल को हासिल किया जा सकता है। ●





आप के सवाल मेनका आंटी के जवाब

मेनका आंटी पशुपक्षियों से बहुत प्यार करती हैं। अब आप के सवालों का जवाब मेनका आंटी देंगी। जैसे पशुपक्षियों को खाना कैसे खिलाएं, उन से कैसे प्यार करें, कैसे उन की देखभाल करें आदि। वे एक सांसद तो हैं ही, कुशल पर्यावरणविद् भी हैं।

जानवर हमारे ग्रह के निवासी हैं, जब हम उन्हें मार कर या खा कर उन के अंगों का इस्तेमाल न कर उन का सम्मान करते हैं, तो हम अपने ग्रह और प्रकृति के प्रति सम्मान दर्शाते हैं। जिन पशुओं तथा जानवरों को हम पालतू जानवर के रूप में रखते हैं, वे पूरी तरह से हम पर निर्भर रहते हैं और उन्हें अवश्य ही प्यार किया जाना चाहिए। उन्हें सम्मान के साथ जीना चाहिए जैसे कि हम अपने भाइयों और बहनों को रखेंगे। पक्षियों और मछलियों को पालतू जानवर के रूप में न रखें, उन्हें पिंजरे में कैद करना और उन्हें दयनीय बनाना अच्छा नहीं है।

मेनका संजय गांधी

मेरे पालतू खरगोश को अपने पिंजरे से बाहर आना पसंद नहीं है। वह दो महीने का है। उसे बाहर लाने का सही समय कब होगा?

शीना पांडे, 7 वर्ष, जबलपुर

ज्यादातर समय खरगोश खेलने के लिए बाहर नहीं आते हैं क्योंकि वे डरे हुए तथा शर्मीले होते हैं। उन्हें आप पर भरोसा करना सीखने के लिए समय की जरूरत होती है। अगर आप का खरगोश बहुत ज्यादा शर्मीला है तो दरवाजा खोल दें और उन से दूर हो जाएं, जब आप बैठे होते हैं तो खरगोशों को कम डर लगता है, अगर वे सोचते हैं कि आप उन्हें देख नहीं सकते हैं। अपने खरगोश के साथ आप 15 से 30 मिनट तक ही रहें। उसे थपथपाने या उठाने की कोशिश न करें। उसे थपथपाया तो अगली बार वह बाहर नहीं निकलेगा। इसलिए आप खरगोश को खुद ही बाहर निकलने और इधरउधर घूमने दें। आप बाहर की ओर सेब के रस को जमीन पर छिड़क सकते हैं। सेब के रस की खुशबू खरगोश को बाहर आने के लिए मजबूर कर देगी। यह चारा का काम करेगा।



ANUSHA AGARWAL

मेरे पड़ोसी का कुत्ता जब भी मुझे देखता है, भौंकने लगता है। मुझे कुत्ते पसंद हैं लेकिन वह मेरा दोस्त बनाना नहीं चाहता है। मैं उसे अपने जैसा बनाने के लिए क्या कर सकती हूँ?

स्वाति शाह, 9 वर्ष, पुणे

आप सीधे कुत्ते को मत देखो। जब भी आप उस के पास गुजरें, धीरे से उस के आगे कुछ बिसकुट फेंक दें। जल्द ही वह आप को अच्छे नजरिए से देखना और आप से जुड़ना शुरू कर देगा।

यदि आप पालतू जानवरों, पशुपक्षियों के बारे में कुछ भी पूछना चाहें, तो अपने प्रश्न हमें भेजें, मेनका आंटी हर प्रश्न का जवाब देंगी।

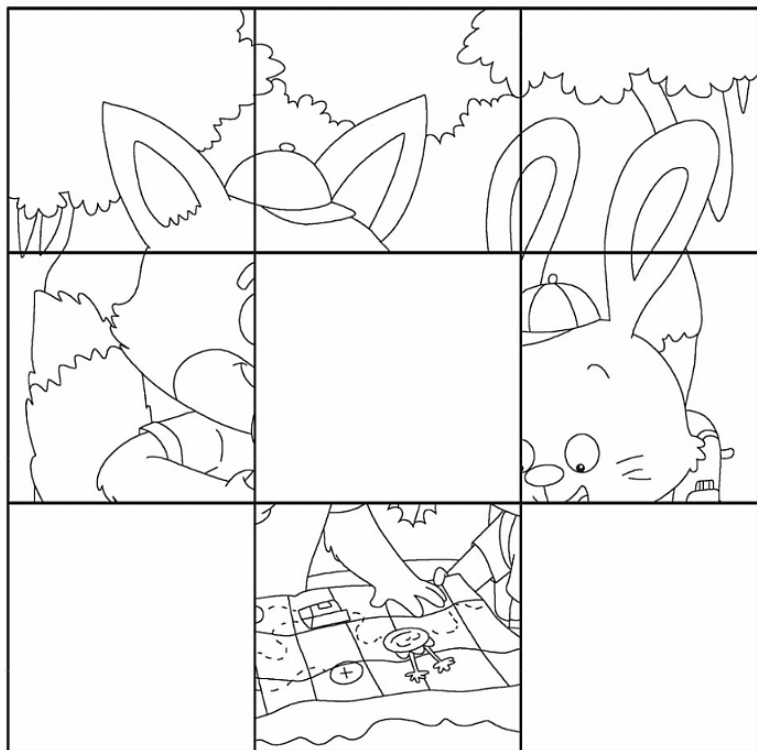
✉ writetochampak@delhipress.in

☎ 8657402248



इस चित्र में कुछ हिस्से खाली रह गए हैं. चित्र को देखें, उन्हें पूरा करें और फिर इन में रंग भरें.

चित्र पूरा करें



मायरा की जीत

कहानी • पूनम पांडे

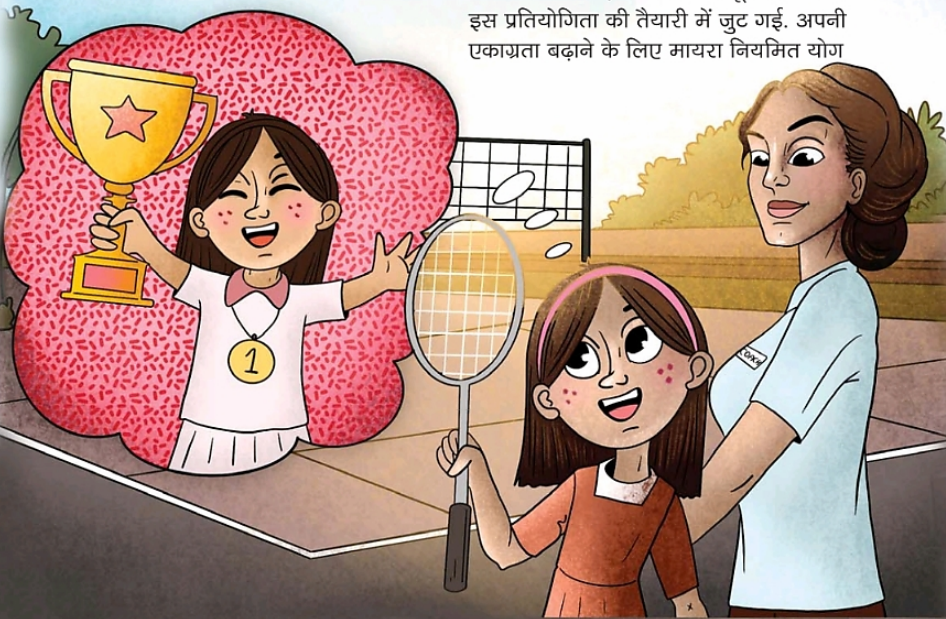
इस साल मायरा 8वीं कक्षा में आ गई थी। पिछले एक साल से वह बैडमिंटन खेलने का प्रशिक्षण ले रही थी। अक्सर जब मायरा एक हाथ में बैडमिंटन रैकेट पड़ती थी तो दूसरे हाथ में बड़ी सी ट्रौफी की कल्पना में खो सी जाया करती थी।

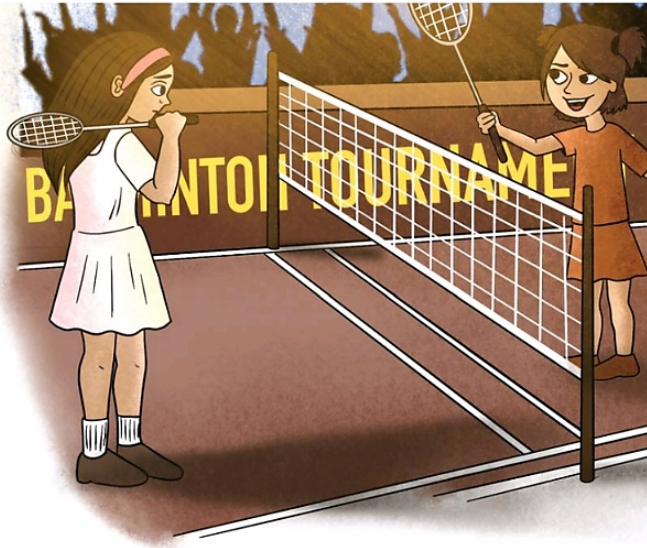
उस की इच्छा थी कि वह चैंपियन बने और कई पदक, पुरस्कार, ट्रौफी आदि जीते। एक दिन अपने कोच से उस ने अपनी इच्छा को व्यक्त करते हुए कहा, “मैं हर पदक जीतना चाहती हूँ।”

यह सब सुन कर उस के कोच बोले, क्यों

नहीं, यह सब बिलकुल संभव है मायरा। तुम यहां स्टेडियम में एक साल से प्रैक्टिस रही हो। अब तुम किसी भी प्रतियोगिता में भाग ले सकती हो। अगले महीने अपने शहर के स्पोर्ट्स क्लब की तरफ से बैडमिंटन टूर्नामेंट का आयोजन किया जा रहा है। तुम भी अपना रजिस्ट्रेशन करवा लो यह प्रतियोगिता बिलकुल निशुल्क है।”

अपने कोच से उत्साहित हो कर मायरा काफी प्रभावित हुई। घर लौट कर उस ने मातापिता के सामने अपने मन की बात रखी तो उन्होंने उसे प्रवेश के लिए सहमति दे दी। अगले ही दिन मायरा ने अपना नाम रजिस्टर करवा दिया। अब वह बड़े जोश और ज़बून के साथ इस प्रतियोगिता की तैयारी में जुट गई। अपनी एकाग्रता बढ़ाने के लिए मायरा नियमित योग





तो पहले ही राउंड में बाहर हो जाएगी. निकल ले लूजर.”

वहीं कुछ लोग मायरा का जोश बढ़ा रहे थे. मायरा सब सुन रही थी. उस की घबराहट बढ़ गई. वह कांपने लगी. मायरा काफी कोशिश कर रही थी, पर उस डगमगाते आत्मविश्वास ने उस के हाथ और रैकेट दोनों को पत्ते की तरह हिला दिया था, वह भरोसा ही नहीं कर पा रही थी कि यह

भी करने लगी, वह मेहनत कर स्पर्धा में चैंपियन बनना चाहती थी.

वही हथेली है, वही कलाई है, जिस से रैकेट को घुमा कर वह तेज शौट लगाती थी.”

नियत समय पर मैच की घोषणा हो गई. पहले मायरा को 4 मैच खेलने थे और 3 मैचों में जीत हासिल करनी थी.

आत्मविश्वास तो दूर की बात आज इस समय मायरा को खुद भी यही लग रहा था मानो उस ने आज ही रैकेट पकड़ा था. मायरा किसी तरह खेलने लगी, लेकिन अचानक दो बार रैकेट उस के हाथ से छूट कर नीचे जमीन पर जा गिरा. उस की इस नादानी पर पूरी गैलरी में हंसी की आवाज गुंजने लगी.

तब कहीं जा कर वह फाइनल में अपने आप को देख सकती थी. मायरा ने अपनी सारी मैच सारिणी देखी और घबराहट को नियंत्रित किया, वह मजबूत मन के साथ मैदान में आ गई. मगर यह क्या? उस ने अपने सामने अपने प्रतिद्वंद्वी को देखा तो उसे चक्कर सा आने लगा. मायरा उसे जानती थी. वह एक जानीमानी खिलाड़ी थी. वह मायरा से एक साल ही बड़ी थी पर 5वीं कक्षा से खेलों में हिस्सा ले रही थी. गैलरी से दर्शकों की आवाजें आ रही थीं. कुछ तो उसी का मजाक उड़ा रहे थे, “यह पतलीदुबली कौन है? यह

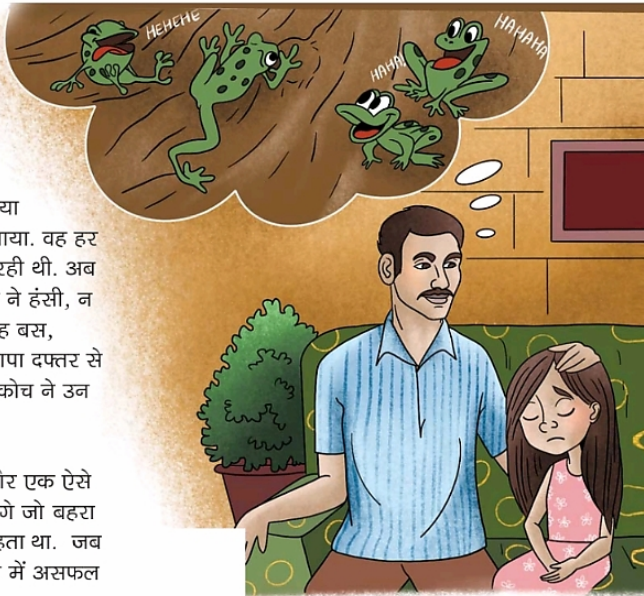
चारों तरफ से सीटियां बज रही थी. उस की खिल्ली उड़ रही थी. आज मायरा का प्रदर्शन बड़ा निराशाजनक रहा.

उस की बैचेनी इतनी बढ़ गई थी कि वह शर्म से किसी से नजरें तक नहीं मिला पा रही थी. मायरा जानती थी कि इस स्पर्धा से वह बाहर हो गई है. अब वह चुपकेचुपके क्लब से ऐसे

निकली कि भागतीदौड़ती घर पहुंच कर ही रुकी.

घर आ कर उस ने न नाश्ता किया और न ही ठीक ढंग से खाना खाया. वह हर चीज को पानी की तरह निगल रही थी. अब वह एकदम खामोश हो गई. वह ने हंसी, न रोई. न किसी से कुछ कहती. वह बस, गुमसुम ही रही शाम को जब पापा दफ्तर से लौटे पर वे भी चुप रहे, क्योंकि कोच ने उन को सबकुछ बता दिया था.

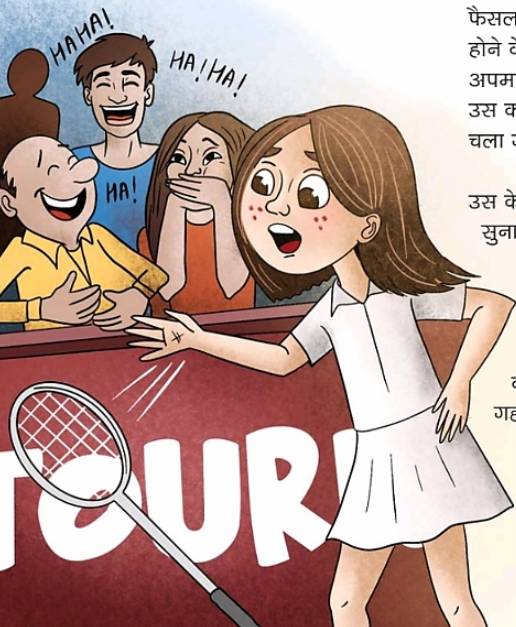
पापा मायरा के पास बैठ गए और एक ऐसे मेढक की कहानी उसे सुनाने लगे जो बहरा था लेकिन पूरी तरह जोश में रहता था. जब सारे मेढक एक पहाड़ी पर चढ़ने में असफल



रहे तो उस ने अकेले ही पहाड़ी पर चढ़ने का फैसला किया और विजेता बन गया. बहरा होने के कारण वह अन्य मेढकों की अपमानजनक बात नहीं सुन सका और उस का मनोबल गिरने के बजाय बढ़ता चला गया.

उस के पापा ने ऐसी ही एक और कहानी सुनाई. एक खरगोश ने इसी मनोबल के दम पर शेर को कुंए में दूसरा शेर दिखा कर उस का काम तमाम कर दिया. तिनके जैसी चींटी भी एक विशालकाय हाथी को हरा देती है, ऐसा कह कर पापा चुप हो गए. अभी शाम गहरी नहीं हुई थी.

पापा की कहानियों ने मायरा को जैसे कोई ताजगी भरा दैनिक पिला



दिया. उस में एक नई ताकत भर गई थी. वह इन से इतनी प्रेरित हुई कि उस ने तुरंत अपना रैकेट उठाया और घर के आंगन में ही कुछ शॉट लगाने का अभ्यास करने लगी. रैकेट की तेज आवाज मां भी सुन रही थीं.

आज उस की मां ने पालक का सूप और बेसन के चीले बनाए थे ताकि पालक के सूप का जायका उस की निराशा दूर करे और बेसन के चटपटे चीले का स्वाद उस को फिर से जोश से भर देंगे.

मायरा ने रात का खाना मजे से खाया. आज

सुबह के मैच का उस ने पलपल का हाल सुनाया.

उस के मातापिता उस की बात सुन कर काफी संतुष्ट हो गए. वे यही चाहते थे कि मायरा अपने प्रतिद्वंद्वी की खूबियां जाने और अपना आत्मविश्वास बनाए. आने वाले मैचों में मायरा क्या करेगी? कैसे खेलेगी? कितने पदक लाएगी? उन को इस बात की कतई फिक्र नहीं थी, क्योंकि वह जानते थे कि हर साल दर्जनों नहीं बहुत सारे दूर्नामेंट होते हैं.

अब वे सुकून महसूस कर रहे थे, क्योंकि मायरा सही दिशा में आगे बढ़ रही थी. वह ढेर सारे पदक जीतने वाली खिलाड़ी के बजाय एक महान खिलाड़ी बनने के महत्त्व को समझने लगी थी.

मायरा की सूझबूझ और आत्मविश्वास देख कर उन्हें यकीन हो गया कि अब मायरा के चैंपियन बनने में ज्यादा समय नहीं लगेगा. ●



DIYA SENGUPTA

बास्केट का मिलान करें

बास्केट में रखी सब्जियों का मिलान नीचे चित्र में दिखाए गई सब्जियों से करें.



A



B



C



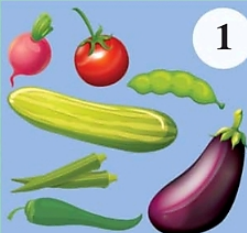
D



E



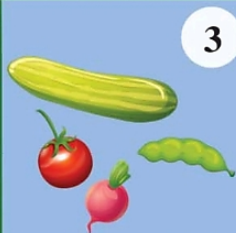
F



1



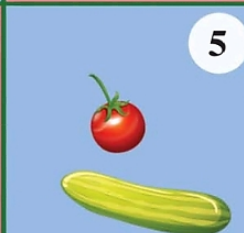
2



3



4



5



6

दादाजी और शिक्षक दिवस

कहानी • विवेक चक्रवर्ती

रिया और राहुल कुछ लिख रहे थे और कागज के टुकड़ों को इधर-उधर बिखेर रहे थे।



मैं कुछ भी नहीं सोच सकती हूँ।

मैं भी नहीं सोच पा रहा हूँ।

बच्चों, क्या हुआ? तुम दोनों चारों ओर कागज क्यों फैला रहे हो?

दादाजी, हम टीचर्स डे पर कविता लिख रहे हैं और सोच रहे हैं कि अपने टीचर्स को कौन सा गिफ्ट दे सकते हैं।

दादाजी, हम अब तक अच्छी कविता नहीं लिख पाए हैं। ये सभी कागज खराब कविताओं के हैं जिन पर हम ने लिखा और इन्हें फेंक दिया।



अच्छा, वह बात है। लेकिन चारों ओर कागज के टुकड़े क्यों फैला रहे हो?

लेकिन इस तरह कागज बरबाद करना अच्छी बात नहीं है।

दादाजी, चिंता मत कीजिए, अगर कौपी के पेज खत्म हो जाएंगे तो हम दूसरी कौपी खरीद लेंगे।

लेकिन क्या तुम जानते हो कि इस के कारण कितने पेड़ काटे जाते हैं? मुझे बताओ, हम टीचर्स डे क्यों मनाते हैं?



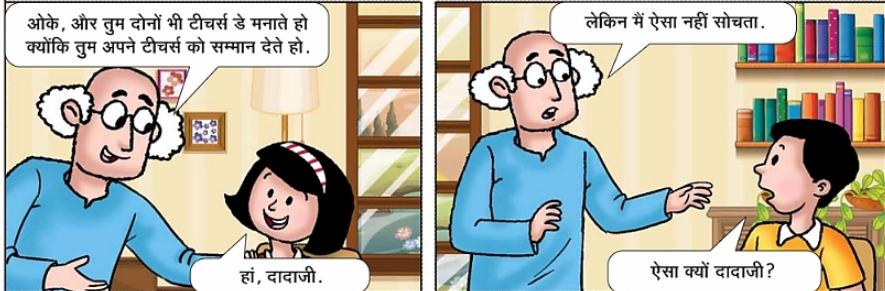
5 सितंबर को पूर्व राष्ट्रपति डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्मदिन है, जो एक शिक्षक भी थे। उन के सम्मान में ही यह दिवस मनाया जाता है।

ओके, और तुम दोनों भी टीचर्स डे मनाते हो क्योंकि तुम अपने टीचर्स को सम्मान देते हो।

हां, दादाजी।

लेकिन मैं ऐसा नहीं सोचता।

ऐसा क्यों दादाजी?



तुम्हारे टीचर्स तुम्हें सिखाते हैं कि गंदगी मत फैलाओ और तुम दोनों ने क्या किया है, देख लो. पूरा कमरा अस्तव्यस्त हो गया है.

इतना ही नहीं, तुम्हारे टीचर्स ने तुम्हें सिखाया होगा कि पेड़पौधों को नष्ट होने से बचाओ और तुम कागज बरबाद कर रहे हो. इस से पेड़ों को नष्ट होने से नहीं बचाया जा सकता.

सौरी दादाजी, अब हमें इसे साफ कर लेने दीजिए.

लेकिन दादाजी, अगर हम कविता लिखने की कोशिश करते हैं तो हमें कागज की जरूरत तो पड़ेगी.

तुम्हारे पास कंप्यूटर या फोन है तो तुम इन पर कविताएं क्यों नहीं टाइप कर लेते हो और जिसे तुम पसंद नहीं करते उसे डिलीट क्यों नहीं करते?

हम ने तो इस बारे में सोचा ही नहीं था.

अगर तुम अपने शिक्षकों यानी टीचर्स द्वारा बताए गए रास्ते पर चलोगे, तो मैं समझता हूँ कि तुम्हारी ओर से यह उन के लिए सब से बढ़िया गिफ्ट होगा.

आप सही कह रहे हैं, दादाजी.

अंतर बताओ

यहां 10 गलतियां हैं। आप उन गलतियों को ढूँढ़ कर बताएं।



हमारा और उन का पाचनतंत्र

सी स्टार्स को स्टारफिश के नाम से भी जाना जाता है। इन की 5 या अधिक भुजाएं होती हैं। हालांकि वे मनुष्यों से बिल्कुल ही भिन्न दिखाई देती हैं, फिर भी उन के पास एक समान कार्यशील पाचनतंत्र है।

हमारा शरीर भोजन का उपयोग करता है, इसे संसाधित करता है और बाकी बचा सब बेकार हो जाता है। इसी तरह स्टारफिश अपने पाचनतंत्र का इस्तेमाल कर भोजन को अवशोषित और उत्सर्जित करती है। उन के

पास एक छोटी आंत है, जैसे मनुष्य की होती है, जो उस के लिए भोजन को पचाते हैं। स्टारफिश के अपने अपशिष्ट यानी बेकार पदार्थ से छुटकारा पाने के लिए उत्सर्जी अंग नहीं होते हैं। वे अपने शरीर में मौजूद छोटेछोटे छिद्रों द्वारा अवशिष्ट पदार्थ के कणों को बाहर निकाल देते हैं। वे अपने पैर की नलियों से पेशाब करते हैं जोकि स्टारफिश के सिरों में से एक में पाया जाता है।

इस के अलावा स्टारफिश और मनुष्य दोनों ही प्रकाश को देख और पहचान सकते हैं।

स्टारफिश के दिमाग और रक्त नहीं होते। वे अपने तंत्रिकातंत्र के माध्यम से पोषक तत्वों को पंप करने के लिए समुद्र के पानी का उपयोग करते हैं



बदलाव स्वीकार करें

कहानी • हरिनी राघवन

मधु उनींदी आंखों से उठी और उस ने बहुत थकान महसूस की, क्योंकि उसे स्कूल के लिए तैयार होना पड़ रहा था. उसे स्कूल में होने वाले वार्षिक क्विज कंपीटिशन की चिंता हो रही थी इसलिए उसे सिर में दर्द महसूस हो रहा था. साल के आखिर में प्रत्येक कक्षा से चुने हुए बच्चों को एकदूसरे के विरुद्ध टीम में प्रतियोगिता के कई राउंड बाद चुना जाता है.

यह दिन क्विज कंपीटिशन का था और मधु बड़ी सावधानी से फाइनल में प्रवेश करने की तैयारी कर रही थी. पूरी रात वह सैमीफाइनल के रिजल्ट को ले कर चिंतित रही. वह कैसे अच्छा परफॉर्मेंस दिखाए, बस इसी टेंशन में उसे रातभर नींद नहीं आई. परेशान हो कर वह ब्रैकफास्ट करने के लिए डायनिंग टेबल के पास बैठ गई. उस के तनाव के पीछे क्या कारण है, यह जानने का उस की मां ने प्रयास किया. वह देख रही थीं कि मधु रात में अच्छी नींद नहीं ले पाई थी.

जब मधु विचारों में खोई ब्रैकफास्ट करने लगी तो मां ने बीच में टोका, “मधु, तुम्हें क्या हो गया है? ऐसी क्या बात है जिस से तुम्हें निराशा हो रही है?” मां ने पूछा.

मधु ने जवाब दिया, “नहीं मां, ऐसी कोई बात नहीं है. आज क्विज कंपीटिशन का फाइनल है. इसलिए मैं रिजल्ट को ले कर चिंतित हूँ.”

मां ने आश्चर्य जताते हुए कहा, “अरे हां, मैं तो बिलकुल ही भूल गई थी. तुम्हें और तुम्हारी टीम को बधाई. तुम्हें सफलता अवश्य मिलेगी.”

मां मधु की समस्या से भलीभांति परिचित थीं. जब भी कंपीटिशन या परीक्षा होती थी तो मधु हमेशा चिंता का अनुभव करती थी. कोई भी सांत्वना और भरोसा उस की चिंता को कम कर देता था. इवेंट



समाप्त होने के बाद ही मधु अपनी दिमागी शांति को फिर से हासिल कर पाती थी.

मां और पापा ने उसे कई बार सलाह दी थी कि ये सब चीजें सरलता से लिया करो, हर कंपीटिशन के लिए तनाव मत लो. वे हमेशा महसूस करते थे कि वह ऐसे समय पर बहुत टेंशन में हो जाया करती थी. मां अहसास करती थीं कि यह बात किसी भी तरह से मधु के लिए ठीक नहीं हो सकती. वह अभी भी उस बच्चे की तरह थी जो अपने रिजल्ट को ले कर आशंकित रहता है और हमेशा अच्छा करने के प्रयास में लगा रहता है.

जब रिजल्ट उस के पक्ष में आता तो वह खुशी से भर जाती और यदि रिजल्ट विपरीत आया तो वह टूट जाती तथा निराश हो जाती थी. उस दिन पूरी रात मां और पापा ने उस के साथ बिताई और उस की चिंता को नियंत्रित करने और हालात काबू करने लिए रातभर उसे संभालते रहे. जब भी अगला कंपीटिशन या परीक्षा सामने आती तो वह भी कोई भिन्न नहीं होती थी. मधु की बहुत ही निराशाजनक स्थिति होती थी.

मां ने आश्चर्य हो कर अपना हाथ मधु के कंधे पर

रखा और बोली, “मधु, तुम अभी भी बच्ची हो भविष्य में तुम्हारे रास्ते में बहुत सारी चुनौतियां आएंगी। हरेक से कुछ सीखो और परिणाम से खुश होने की कोशिश करो, खुशी मनाओ, चाहे परिणाम कैसा भी हो। परिणाम पर ध्यान केंद्रित मत करो, अच्छा प्रयास करो और रिजल्ट के बारे में चिंता मत करो。”

मधु रोते हुई बोली, “मैं चिंता कैसे न करूं मां? यदि समय पर मैं प्रश्नों के कुछ उत्तर याद नहीं कर सकी या उत्तर देने के लिए बटन नहीं दबा सकी, तो सोचो क्या होगा? विचित्र कंपीटिशन में समय कितना महत्वपूर्ण होता है। मैं कुछ भी खोना नहीं चाहती, मां, मैं हमेशा सफल हो कर उत्साहित होना पसंद करती हूं और मुझे असफल होना जरा भी पसंद नहीं है。”

जब मां उस की बातों का विरोध कर उसे समझाने की कोशिश कर रही थी, तभी दादीमां उन की तरफ आई और बोली कि वे वैक्सिन लगवाने अस्पताल जाने के लिए तैयार हो चुकी हैं। दादीमां काफी परेशान दिख रही थीं और उन के चेहरे से साफ झलक रहा था कि वे पत्थर सी जड़ हो गई थीं। उन्होंने टेबल को हाथों से पकड़ लिया और अपना सिर उस पर टिका दिया, चक्कर आने की बात कहते हुए वे वहीं बैठ गईं।

मधु और उस की मां ने उन्हें सोफे पर आराम करने के लिए बिठाया और मधु दादीमां के लिए पानी ले आईं।

मां ने दादीमां को समझाया, “मां, यह सिर्फ एक ठीका है। आप को तनाव में आने की जरूरत नहीं है,” बोलतेबोलते उन्होंने ब्लडप्रेसर नापने की मशीन निकाली और दादीमां का ब्लडप्रेसर जांचने लगीं।

दादीमां भड़कते हुए बोलीं, “क्या तुम्हें नहीं पता कि मैं अस्पताल जाने से कितनी डरती हूं, जाने से पहले मैं हमेशा घबरा जाती हूं और जब तक घर वापस नहीं आ जाती, तब तक नर्वस महसूस करती हूं。”

मां ने समझाया, “इतने तनाव में रहने से कुछ हासिल नहीं होता है? इस तनाव के कारण कई सदमे में चले जाते हैं। नर्वस और चिढ़चिढ़े हो जाते हैं, इसलिए आप का ब्लडप्रेसर बढ़ जाता है और इसी कारण स्थिति खराब हो जाती है। चलिए, अभी मंदिर तक चलते हैं और उस के बाद जब आप शांत हो जाएंगी तो अस्पताल जाएंगे。”

मधु की मां ने दादीमां से कहा, “मां, अपनेआप से कहिए कि हरेक चीज बढ़िया हो गई है और आप बिल्कुल सामान्य हो जाएंगी。”

“लेकिन मां, मैं समझती हूं कि दादीमां ठीक नहीं हैं। तनाव में होना उन के शरीर को कैसे प्रभावित करता है?” हेरानी से मधु ने पूछा।

“मधु, जब हमारा शरीर तनाव में होता है, तो यह मस्तिष्क को सिग्नल भेजता है, जो हारमॉन्स, रसायन हमारे शरीर में उत्पन्न करता है और तुरंत ब्लडप्रेसर को बढ़ा देता है तथा दिल की धड़कन तेज कर देता है। इसी कारण जब तुम इस स्थिति में होते हो तो अपनी धड़कन तेज महसूस करते हो,” मां ने जवाब दिया।

“इस अवस्था में रहना हमेशा अच्छा नहीं होता है। कभीकभी जब हम चिंतित होते हैं, तो घबराहट होनी





संभव है। लेकिन जब हम यह जानते हैं कि यह स्थिति होगी तो हमें इस का विरोध करने के लिए अच्छी तरह तैयारी कर लेनी चाहिए और हर समय चिंता नहीं करनी चाहिए,” मां ने कहा।

इतना कहते हुए मां ने चाभी और अपना बैग उठाया तथा मधु की ओर मुड़ कर बोली, “मधु, तुम्हें वास्तव में यह समझना होगा कि हमेशा युद्ध करने की स्थिति में सफलता नहीं मिलती। तुम्हें शांत रहने और अपने कार्य पर फोकस करने की जरूरत है न कि रिजल्ट की। तुम क्या कर सकती हो, इस बारे में चिंता करो और बाकी चीजों को भूल जाओ।”

जो चीज तुम्हारे हाथ में है, वह है अच्छी तरह तैयारी और परफॉर्म करना। चाहे जैसे भी हालात बनें, हमें हालात संभालने के लिए खुद को तैयार कर लेना चाहिए। हर समय घबरा कर तुम सिर्फ अपने दिमाग और शरीर को तनाव में डालते हो। तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। थोड़ी सी चिंता हमें अच्छी तैयारी करने में मदद करती है, लेकिन उस का हमारी परफॉर्मेंस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए।”

मां झुकीं और मधु के हाथों को पकड़ कर बोली, “हम तुम्हें बहुत प्यार करते हैं और याद रखना कि कोई भी कंपीटिशन में हार जाने को ले कर तुम्हें जज नहीं करेगा। खुद पर इतनी कठोरता मत करो और बस, अपना काम करती जाओ।”

मधु ने मां की बात पर अपना सिर हिलाया और

विचारों में तल्लीन डायनिंग टेबल पर लौट आई। वह अब साफतौर पर दादीमां के लिए चिंतित दिख रही थी।

उस ने दादीमां का हाथ थामा और विस्तार से बताने लगी, “दादीमां, यह वेकसीनेशन सभी के लिए है और इस के लिए चिंता करने तथा घबराने की कोई जरूरत नहीं है। हम सब आप के साथ हैं। कृपया आप अपने स्वास्थ्य को खराब न करें।”

स्कूल जाते हुए मधु ने फिर सोचा और आशा जताई कि दादीमां अच्छा महसूस करेंगी। दादीमां के प्रति विचारों में खोए उस ने अपने डर से निबटने के बेहतर तरीके पर ध्यान केंद्रित करने का मन बना लिया।

मधु ने सोचा, “मां ठीक कह रही हैं। मैं अपने डर से लड़ूंगी और चिंतित होने की कोशिश नहीं करूंगी, क्योंकि इस से मुझे तनाव होता है।”

यह समय कंपीटिशन का था और मंच सजा हुआ तैयार था। बच्चों के नाम पुकारे जा रहे थे कि वे अपनी अपनी सीट पर बैठ जाएं। जैसे ही मधु अपनी सीट की ओर बढ़ी, तब उस ने अपने मन में प्रक्रिया को एंजॉय करने और किसी भी चीज की चिंता न करने की सोची। उस ने भयपूर्ण विचारों को खुशनुमा विचारों में बदलने की कोशिश की।



परफ़ॉर्मैंस के दौरान जो अपने डर को छिपाने की कोशिश करता है। वह सामान्य रूप से शांत व्यक्ति होता है। मधु ने खुद को बातचीत में व्यस्त रखा। अपनी टीम के साथियों के साथ बातें करने और सतर्कता के साथ हंसमुख बने रहने की कोशिश करने से उस ने कम तनाव महसूस किया और वह पहले से अब बहुत सहज महसूस कर रही थी।

उन्होंने माहौल शांत करने के लिए लगातार चुटकले सुनाए और मधु ने बारबार याद किया कि मां ने दादीमां को क्या सलाह दी थी। उस ने सतर्क हो कर कहा, “हर चीज बहुत अच्छी है और घबराने की कोई जरूरत नहीं है। मैं अपना काम करने जा रही हूँ और हरेक क्षण को एंजोय करने वाली हूँ।”

पूरे इवेंट के दौरान मधु पहले से काफी सामान्य दिखाई दी। ऐसी वह पहले कभी नहीं दिखी थी और बीते दिनों की अपेक्षा इस बार सबकुछ बहुत ही सरलता और खूबसूरती से गुजरा था।

वह शारीरिक रूप से नॉर्मल थी और घबराहट महसूस नहीं कर रही थी जैसा कि पहले होता था।

मधु की टीम कंपीटिशन में दूसरे नंबर पर आई और खुशी से उन्होंने रनरअप ट्रौफी को जीत लिया। मधु



अपनी दादीमां को देखने के लिए घर जाने का इंतजार करने लगी। वह घर चली आई। दादीमां भी ठीक लग रही थीं। मधु ने खुशी से दादीमां को ट्रौफी दिखाई जिसे आज उस ने स्कूल में जीता था।

मधु ने अपनी मां को विस्तार से बताया कि वह आज कितनी खुशी महसूस कर रही है। विजय कंपीटिशन जीतने की वजह से नहीं बल्कि मां की सलाह मानने से और सफलतापूर्वक अपने डर पर काबू पाने से जो हर समय उस के लिए चिंता बना रहता था।

मां काफी खुशी महसूस कर रही थीं। उन्होंने मधु को गले लगाया और कहा, “हम बदलाव को तभी अपना सकते हैं जब हम उसे स्वीकार करना चाहेंगे। यही वास्तव में जीतने का पल होता है और यह हमारी आदत होनी चाहिए।”

उत्तर पृष्ठ :

पृष्ठ 9 : नारियलों की

गिनती करें :

क्लौकवाइज (दक्षिणावर्त)

20 नारियल,

18 नारियल,

18 नारियल,

15 नारियल.

पृष्ठ 23 : छिपे चित्र ढूँढ़ें :



पृष्ठ 25 : शब्दों का जोड़ा बनाएं :

- | | |
|----------------|-----------------|
| 1. सनफ्लावर | 13. लाइट हाउस |
| 2. विलबोर्ड | 14. बटरफ्लाई |
| 3. ऐंटफार्म | 15. स्टारफिश |
| 4. ग्रेनस्टोन | 16. रेनकोट |
| 5. बोटाई | 17. हैंडबैग |
| 6. ब्लूबेरी | 18. मूनबोक |
| 7. स्केयर क्रो | 19. रॉकेटशिप |
| 8. कपकेक | 20. टेबलस्पून |
| 9. आर्मचेयर | 21. वाटरमेलन |
| 10. दूधब्रश | 22. किकबोक्सिंग |
| 11. केवमैन | 23. फायरप्लेई |
| 12. फिश हुक | 24. डोर बैल |

पृष्ठ 43 : बास्केट का मिलान करें :

A-5, B-6, C-3, D-2, E-1, F-4.



WE SPEAK IN **30** DIFFERENT CONSUMER VOICES. BECAUSE EVERY BRAND IS UNIQUE.

With virtually every age group, income segment and language covering 30 million Indians, we are the most diverse magazine group in India. So next time you want to address anyone in India, you are better off speaking to the Delhi Press Group today.

DELHI PRESS

To subscribe to our magazines Call/SMS/WhatsApp: 08588843408,

E-mail: subscription@delhipress.in, You can also subscribe online at www.delhipress.in/subscribe

CARAVAN CHAMPAK सरिता गृहशोभा चंपक मुक्ता सरसु सलिल फार्म फूड सत्यकथा मनोहर
गृहयोग चंपक सरसु सलिल चंपक सलिल गृहशोभा डेज़ीरा चम्पक सारंग प्रमाणचंद्र ९५०८८
गुरुश्रीधरा गुरुगंगा १०८८ नैलि चम्पक चम्पक चम्पक चम्पक चम्पक चम्पक चम्पक चम्पक



GRAND
LONDONDERRY™
Lacto Bonbon Rich Caramelised Milk Candy



**Tasty
Very Very!**